* ओ३म् *

पालि ग्रन्थमाला प्रथम भाग

जिनचरितं

उपाध्याय चन्द्रमणि
विद्यालङ्कार
गुरुकुल काङ्गड़ी

प्रथमावृत्ति ५०० प्रति | सं० १९७२ | मूल्य ।–)

* ओ३म् *

जिनचरितं

उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालङ्कार
गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी में
नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबन्ध से
मुद्रित तथा प्रकाशित।

प्रथमावृत्ति ५०० } संवत् १९७२ वि० { मूल्य -।)

* ओ३म *

प्रस्तावना ।

गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग में पाली भाषा के पढ़ाने का प्रबन्ध होगया है। पहले लंका के कुलम्बो नगर स्थ परमानन्द महाविद्यालय के वर्त्तमान आचार्य श्री कल्याणतिष्य जी महाराज यहां पाली पढ़ाने के उद्देश्य से आये थे परन्तु इस स्थान का शीत उन के प्रतिकूल पड़ा और वह रोगभाग होकर लौट गए। तब स्नातक चन्द्रमणि प्रतिष्ठित विद्यालंकार को गुरुकुल की ओर से लंका भेजा गया जहां से आचार्य का प्रशंसा पत्र लेकर वह गत आषाढ़ मास में लौट आए थे। आश्विन १९७२ में आर्य सिद्धान्त के कुछ छात्रों को इन्होंने पालीभाषा पढ़ाना आरम्भ कर दिया। बौद्ध धर्म सम्बन्धी पुस्तकें अधिकतर पाली में हैं और पाली भाषा के ग्रन्थ प्रायः सिंहाली लिपि में छपे हैं; भारत वर्ष के छात्रों के मार्ग में यह बड़ी भारी रुकावट है। इस रुकावट को दूर करने के लिए उपाध्याय चन्द्रमणि जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय के लिए पाली के ग्रन्थों को देवनागराक्षरों में छपवाना आरम्भ किया है। उपाध्याय चन्द्रमणि जी का यह पुरुषार्थ सफल होगा और बहुत से विद्यार्थियों को बौद्धधर्म विषयक मौलिक आन्दोलन में प्रवृत्त करएगा-यह आशा पड़ती है। पाली ग्रन्थ-माला की यह पहली मणि बुद्धदेव के जीवन चरित्र से ही आरम्भ होनी चाहिए थी। ग्रन्थ का सारांश आर्यभाषा में देकर पाठकों के लिए और भी मार्ग साफ़ कर दिया गया है। ऐसा करने से साधारण आर्यभाषा जानने वालों को भी पाली का जिनचरित सहज में ही समझ आ जायगा।

मुन्शीराम

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय

शुद्धि पत्र

श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
७	पुठा	पुटा
८	असंक्खेयात	असंक्खेयाम
४७	भवा	भवे
६८	पच	पन
७२	महापञ्ञा	महापञ्ञो
८०	पल्लक्क	पल्लङ्कु
९२	अजिनक्खवेणि	अजिनप्पवेणि
९९	मज्ञार	मञ्जार
१२२	सुपञ्ञतो	सुपञ्ञत्ते
१२५	ठपेय्य	ठपेय्युं
२११	पटिञ्ञवं	पटिञ्ञं
४०६	विराजमनं	विराजमानं

॥ ओ३म् ॥

गौतमबुद्ध का जीवन चरित्र

(पुस्तक का सारांश)

चार असंख्येय एक लाख कल्पों में भी पूर्व अमरपुर नगर के एक ब्राह्मण घराने में सुमेध उत्पन्न हुआ वह अभी कुमार ही था कि उसके माता पिता का देहान्त होगया। उनके मरने पर एक दिन कोषाध्यक्ष ने सैकड़ों कोठियों में सुरक्षित धन इसे दिखाया। उसे देख कर यह विचारने लगा हा! इस अनन्त धन को एक मास के लिये भी माता पिता साथ नहीं लेगये! मैं अवश्य लेजाऊंगा। परन्तु जब एकान्त में बैठ कर विचारने लगा तो मनुष्य शरीर में अनेक दोष देखकर बड़ा उद्विग्न तथा उदासीन हुआ। उसने सोचा कि मनुष्य का जन्म तथा मरण दोनों दुःखदायक हैं, यह शरीर जन्म, जरा, व्याधि धर्म वाला है। तब उसने राजा को सूचना देकर शहर में ढौंडी पिटवाकर एक सप्ताह तक याचकों को दान देना शुरू किया परन्तु तो भी उस का धन समाप्त नहीं हुआ। तब सुमेध बन्धुओं को रोते पीटते छोड़ कर घर से बाहर निकलगया और हिमालय प्रदेश में रहकर तपस्या करने लगा और सात दिन में ही बहुत कुछ साधन सम्पन्न हो गया।

एक दिन वह आकाश में विचर रहा था कि मार्ग साफ करते हुए मनुष्यों को देखकर नीचे उतर आया और पूछने लगा कि तुम मार्ग क्यों साफ करते हो। उत्तर मिला कि दीपङ्कर बुद्ध रम्यपुर नगर के सुदर्शन विहार में रहता है उसे आज ४ लाख भिक्षुओं समेत भोजनार्थ निमंत्रण दिया है उसी के लिए हम मार्ग साफ कर रहे हैं बुद्ध का नाम सुनते ही वह फूला नहीं समाया और मार्ग साफ करने की इच्छा प्रकट की, जिस पर उसे एक कीचड़ वाला स्थान साफ करने को मिला। वह अभी साफ ही कर रहा था कि दीपङ्कर आ पहुंचा। यह स्वयं कीचड़ पर लेट गया ताकि बुद्ध उस पर से गुजर

जावे। ऐसी श्रद्धा तथा भक्ति को देख कर दीपङ्कर ने भविष्यद्वाणी की कि आगे तुम गौतम बुद्ध होंगे, अमुक तुम्हारे मुख्य शिष्य (अग्रश्रावक) होंगे और अमुक २ नगरादिक में पैदा होंगे। इस प्रकार कल्याण वचन कह कर, प्रदक्षिणा करके और आठ मुट्ठी पुष्पों से पूजा करके दीपङ्कर बुद्ध आगे चला गया।

अब सुमेधने बड़ा घोरतप करना शुरु किया और बुद्धत्व प्राप्तिके लिए समाधि आदि सब साधन सम्पन्न किये दश प्रकारकी पारमियें संपूर्ण कीं। दान पारमी पूर्ण करते समय याचकों को अपनी आंखे मांस लोहित, शिर, स्त्री, पुत्र और शरीर तक सब कुछ दान किया। इस प्रकार अनेक जन्म जन्मान्तरों में तप करते हुए (विश्वन्तर) वे-सन्तर) राजा के समय तुषित नामक देवलोक में जन्म लिया। वहां बहुत समय तक रहा। इसके पश्चात कपिलवस्तु में पैदा होता है।

इसके पिता का नाम शुद्धोदन था जो कि शाक्य वंशज तथा क-पिलवस्तु का राजा था। इसकी माता मायादेवी देवदह के राजा की पुत्री थी। जिस दिन मायादेवी ने गर्भ धारण किया उस दिन उसने एक श्वेत हाथी को अपनी श्वेत सूंडमें श्वेत कमल लिये हुए स्वप्न मे देखा।

दश मास के पश्चात् जब पुत्रोत्पत्ति का समय आया तब माया ने पति से अपने पितृ गृह में जाने की अनुमति मांगी। अनुमति मि-लने पर बड़े भारी समारोह के साथ देवदह की ओर जाते २ रास्ते के सुन्दर लुम्बिनी वन में एक शाल वृक्ष की शाखा को पकड़े हुए वन की शोभा निहारने लगी। उस समय सन्तानोत्पत्ति की वायु चली और अनुचरों ने आकर चारों तरफ पर्दा डाल दिया। वहां ऐसी अवस्था में ईसा से ६२३ वर्ष पूर्व माया के खड़े २ पुत्रो-त्पत्ति हुई जिस का नाम सिद्धार्थ रक्खा गया। उस दिन वैशाख की पूर्णिमा थी।

राजा को इस शुभ बात की सूचना मिलने पर रानी को पुनः कपिलवस्तु में लौटा लिया। देश में अनेक प्रकार की खुशियें मनाई गई। सामुद्रिक रास्ते से विदेश गये हुए मनुष्य लौट आए कैदियों को छोड़ दिया गया, वस्त्र उछाले गये। राजा का कुलक्रमागत कालदेवल पुरोहित बाहर भ्रमणार्थ गया हुआ था। वह पुत्रोत्पत्ति की वार्ता सुनकर राजा के घर आया और पुत्र देखने की इच्छा प्रकट की। शुद्धोदन पुत्र को उठा कर तपस्वी के अभिवादन के लिए उस के पैरों की तरफ लारहा था कि पुत्र के पैर तापस के शिर की ओर हो गये। तपस्वी ने स्वयं हाथ जोड़ कर सिद्धार्थ को प्रणाम किया। इसे देख कर राजा बड़ा चकित हुआ और आप भी पुत्र के पैरों पर गिर कर अभिवादन किया। जिस दिन राजा का प्रजा सहित क्षेत्र में हल चलाने का वर्षोत्सव दिवस था, उस दिन कपिलपुर खूब सजाया गया। प्रजा भी सज धज कर राजा के घर पर पहुंच गई। वहां इकट्ठे होकर सब जन राजा के पीछे २ बड़े समारोह के साथ क्षेत्र की ओर चले। राजा सिद्धार्थ को भी साथ ले गया।

क्षेत्र में पहुंचने पर दाईयें बच्चे को जवनिका से घिरे हुए जम्बू वृक्ष के नीचे सुलाकर स्वयं बाहर उत्सव देखने चली गई। बच्चा उठ कर आसन जमाये बैठ गया।

इस विचित्र तथा आश्चर्ययुक्त घटना का सब हाल दाईयों ने राजा से कहा और उस ने फिर दूसरी बार पुत्र को महात्मा समझ कर उस के पैरों पर सिर रख कर प्रणाम किया।

इस प्रकार सिद्धार्थ कपिलवस्तु में ही पलता रहा और यौवनावस्था में पहुंचने पर उस का देवदहवंशीय राजपुत्री यशोधरा से विवाह होगया।

एक दिन वह उद्यान में क्रीडार्थ जा रहा था कि मार्ग में एक अत्यन्त वृद्ध मनुष्य दीख पड़ा। उसे देख कर उस का हृदय बड़ा उद्विग्न हुआ। और वहीं से घर लौट आया। इसी प्रकार दूसरे दिन

रोगी तथा तीसरे दिन मृत मनुष्य को लेजाते देख कर उस के मन में नाना प्रकार के प्रश्न उठने लगे और इस अनित्य शरीर की चिन्ता में पड़ा हुआ दुःखी हृदय फिर उद्यान तक न पहुंच कर रास्ते से ही घर लौट पड़ा।

चौथे दिन मार्ग में एक प्रफुल्ल वदन सन्यासी को जाते देख कर उस का हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। और प्रव्रजित बनने की बड़ी प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। उस दिन यह आगे उद्यान में चला गया। वहां पहुंचने पर सिद्धार्थ स्त्रियों के नृत्य गीतादि सुनने में खूब मस्त था कि "पिता ने सन्देश भेजा कि पुत्र तुम्हारे लड़का उत्पन्न हुआ है" इस बात सुनकर सिद्धार्थ के मुख से एक दम यह शब्द निकले की आज मेरा बंधन होगया और राजमहल की ओर चल पड़ा। रास्ते में बैठी हुई शुद्धोदन राजा की भानजी किसागोतमी ने सिद्धार्थ को देखकर कहा कि इस महा गुणी के जो माता पिता हैं और जो इस की माता है वह सब निर्वाण को प्राप्त हो गये। यह सुन कर राजकुमार बड़ा खुश हुआ और उसने गले से अति सुन्दर माला उतार कर उस के पास भेज दी। घर पहुंच कर रात्रि को अपने प्रासाद में पलंग पर लेट गया और स्त्रियें नृत्यगान करने लगीं। परन्तु उस राज कुमार की अवस्था अब बदल चुकी थी। उस के मन पर किसी अन्य उच्च बात ने प्रभुत्व जमाया हुआ था। उस को यह सब नाच गान खुशी के स्थान पर दुःख देते थे। अतः उस ने उन की तरफ ध्यान तक नहीं दिया और सो गया। स्त्रियों ने जब देखा कि हम जिस के मनो विनोदार्थ नाच गान कर रही हैं वह तो ध्यान भी नहीं देता तो वह भी उसी जगह सो गईं। सिद्धार्थ थोड़ी देर पश्चात् विश्राम करके जब उठा तो उन स्त्रियों के अनेक प्रकार के विकार देख कर बड़ा खिन्न हुआ। पहले जमे हुए भावों ने भी अपना प्रभाव किया और उसी समय उस ने घर से निकलने की सोची। तब द्वार पर बैठे हुए छन्न सारथी को बुलाकर कहा कि शीघ्र कन्थक अश्व तय्यार करो

जाते समय हृदय के टुकड़े और नयनों के तारे राहुल पुत्र को देखने के लिए प्रसूतीगृह में गया और दहलीज़ पर पैर रख कर और गर्दन आगे झुका कर झांकी मारी और सोचने लगा कि यदि मैं यशोधरा की बाहु हटा कर पुत्र को उठाता हूं तो वह जाग पड़ेगी और प्रेमवश होकर मेरे जाने में बड़ी भारी बाधा डालेगी, अतः बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् पुनः लौट कर पुत्र को देखूंगा।

छन्न ने आकर कहा स्वामिन्! अश्व ले आया हूं, चलिये।

सिद्धार्थ प्रासाद से उतरा और अश्व को थापी देकर कहा कन्थक! तू आज इसी रात में मुझे तार दे मैं फिर बुद्ध होकर सर्व लोकों को दुःखमय संसार सागर से पार उतारूंगा। ऐसा कह कर वह घोड़े पर सवार होगया, और छन्न को पूंछ पकड़वा उस को साथ लेकर २६ वर्ष की आयु में राज्य वैभव को लात मार मुक्ति की तलाश में घर से निकल पड़ा। अब नगर के महाद्वार से निकल जाने पर सिद्धार्थ के मन में देवासुर संग्राम होता है। मन में विचार उठता है। "सिद्धार्थ! सातवें दिन तुम्हें राज्य मिलेगा, तुम मत जाओ मत जाओ" परन्तु उस के उच्च विचारों ने उत्तर दिया "हां! मैं जानता हूं मुझे सातवें दिन राज्य मिलेगा, हे आसुरीभाव! तुम यहां से चले जाओ मुझे राज्य से कुछ प्रयोजन नहीं" इस प्रकार आसुरी विचारों को दबा कर रात्रि की समाप्ति से कुछ काल पहले ही ३० योजन चलने के पश्चात् वह अनोमा नदी के तीर पर पहुंच गया।

वहां पहुंच कर छन्न को सब आभूषण तथा घोड़ा देकर लौटा दिया। तीक्ष्ण तलवार से अपने सुन्दर केश काट दिये और दोनों दुशाले फैंक कर तपस्वियों का वेष धारण करने के लिए आठों परिष्कार ग्रहण किये।

पुनः अनुप्रिय नामी आम्रवन में जाकर ७ दिन निवास किया। आठवें दिन ३० योजन चल कर भिक्षा के लिए राजगृह पहुंचा।

भिक्षा लेकर पाण्डव पर्वत की छाया में बैठकर भोजन किया। यह भोजन मिश्रित होने से अच्छा न था, जिस से खाने पर वमन होना चाहता था परन्तु यथाकथञ्चित् रोक लिया।

बिम्बिसार राजा सिद्धार्थ का आगमन सुनकर उस के पास आया और राजगृह का राज्य लेने को कहा परन्तु उसने तो राज्य को पहले ही तुच्छ समझ कर छोड़ दिया था। तब राजा ने कहा अच्छा! बुद्धत्व प्राप्ति के पश्चात् आप मुझे धर्मोपदेश दें। सिद्धार्थ ने इस की पूर्ति का वचन दिया और राजा लौट गया।

तत्पश्चात् ६ वर्ष तक सिद्धार्थ ने अनेक कठिन तप तथा दुष्कर कर्म किए परन्तु उन से कुछ लाभ न देख कर वह अजपाल नामी वट वृक्ष की ओर गया। वहां पूर्वाभिमुख आसन जमाय समाधि में बैठ गया। इतने में सुजाता नामी एक स्त्री आई जिस की प्रार्थना पूर्ण होचुकी थी और अब वटवृक्ष के देवता को सुवर्ण पात्र में खीर लाकर देने आई थी। उस ने समाधिस्थ सिद्धार्थ को ही देवता समझकर उस के आगे खीर का पात्र धर दिया और यह कह कर चली गई कि स्वामिन् जैसे मेरी प्रार्थना पूर्ण हुई है वैसे तुम्हारी भी पूर्ण हो तब सिद्धार्थ नेरंजरा-नदी पर गया और खीर खाकर सुवर्णपात्र नदी में फैंक दिया। और पुनः सालवनों में भोजनानन्तर भ्रमण (दिवाविहार) कर के सायंकाल बुद्धगया के बोधि वृक्ष की ओर जा रहा था कि मार्ग में एक श्रोत्रिय ने उसे तृण दिए। उन्हें लेकर वह बोधि वृक्ष पर पहुंचा और वृक्ष की प्रदक्षिणा कर के पूर्व की ओर वह तृण बिछा दिए जिस से १४ हाथ का आसन बनगया। तत्पश्चात् सिद्धार्थ ने प्रतिज्ञा की कि चाहे मेरा मांस, रक्त, अस्थि, धमनी, त्वचा सब सूख जावें परन्तु मैं वीर्य को नहीं छोड़ूंगा, और पूर्वाभिमुख समाधि लगाए बैठ गया। मन में देवासुर संग्राम होने लगा जिस में दैवी विचारों ने आसुरी भावों पर पूर्णतया विजय प्राप्त की और रात्रि के प्रथम याम में पूर्वनिवास, मध्यम याम में दिव्यलोचन, और अ-

न्तिम याम में प्रतीत्यसमुत्पाद तीनों ज्ञान उपलब्ध करके दूसरे दिन सूर्योदय के समय बुद्धत्व प्राप्त किया। बस अब से सिद्धार्थ बुद्ध के रूप में परिवर्तित होता है। तीन सप्ताह बोधि वृक्ष के नीचे, एक सप्ताह रत्नालय में, तथा एक एक सप्ताह क्रमशः अजपाल मुचलिन्द राजायतन वृक्षों के नीचे समाधि लगाई। इस प्रकार बुद्धगया के आस पास ७ सप्ताह की समाधि लगाने के पश्चात बुद्ध ने नाग लता की दातुन करके स्नान किया और हरड़ औषध खाया। और पुनः वैश्यों से लाए हुए मन्थ, मधु पिण्डिक नामी भोज्य पदार्थों से क्षुधा को तृप्त करके अजपाल वृक्ष के नीचे गया। और वहां कुच्छ देर तक अधिगत धर्म की गम्भीरता पर विचार किया। उसने जब मनुष्यों की वर्तमान अवस्था पर दृष्टिपात किया तो एकदम निराशना ही निराशता के घनघोर बादल दिखाई पड़ने लगे। उसने देखा "यह लोक क्लेश,राग,दोष,मोह से भरपूर है,अविद्या की खान है, वह उस धर्म को क्या समझेगा, उस के प्रचार करने से क्या लाभ होगा,, ऐसी निरुत्साह तथा निराशता की अवस्था में आत्मा से आवाज़ उठी "गौतम ! लोकनष्ट हो जायगा, लोक विनष्ट हो जावेगा।"

(२) धर्म प्रचार अब वह धर्म प्रचार के लिये कमर कसता है, और प्रचार करता करता १८ योजन का मार्ग तैकरके मृगदाय वन में पहुंचा। वहां पंचवर्गियों (५ जन थे जो पहले बुद्ध के साथ ही निर्वाण की तलाश में फिरते थे, परन्तु वह बुद्धत्व प्राप्ति का मार्ग भिन्न मानते थे अतः बुद्ध उन से पृथक हो गया था) ने इसे दूर से आते देखकर विचारा कि हम इसे नमस्कार नहीं करेंगें परन्तु राजा का पुत्र होने से बैठने के लिये आसन मात्र देदेंगे। बुद्ध ने उन का भाव योगवल से जानकर मैत्री भावना से उसे दूर किया और जब वह वहां पहुंचा तो उन्हों ने नमस्कार द्वारा मान्य दृष्टि दर्शाई।

उन को अभी यह पता नहीं लगा था कि सिद्धार्थ ने बुद्धत्व

प्राप्त कर लिया है, इस लिये वह उसे 'आवुसो' संबोधन से पुकारने लगे। तब बुद्ध ने कहा 'आवुसो' संबोधन से मत पुकारो 'शास्ता' शब्द का व्यवहार करो। भिक्षुयो! अब मैं बुद्ध पदवी के योग्य हूं, इस प्रकार अपना बुद्धभाव प्रकाशित करके उनको उपदेश द्वारा अपने धर्म में प्रविष्ट किया।

२. पुनः उरुवेल की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में भद्रवर्गीय ३० राजकुमारों को भिक्षु बनाकर प्रचारार्थ भेज दिया।

उरुवेल में पहुंच कर जटिलों को उपदेश द्वारा स्वधर्म में लाकर और जटायें कटवा कर भिक्षु बनाया।

३. पुनः महाराजा बिम्बीसार की प्रतिज्ञा स्मरण करके उन्हीं भिक्षुयों को साथ लेकर राजगृह की ओर चला और वहां लट्ठीवन उद्यानमें डेरा जमाया। बुद्धका शुभागमन सुनकर महाराजा बिम्बीसार प्रधान मंत्री के साथ वहां आया और बुद्ध के पैरों में प्रणाम किया और धर्मोपदेश श्रवण के पश्चात् बौद्धधर्म में प्रविष्ट हुआ। राजा के अनुरोध करने पर बुद्ध उसके घर गया और भोजनानन्तर पुनः राजगृह के वेलुवन उद्यान में ठहरा।

४. महाराजा शुद्धोदन ने वेलुवन में स्वपुत्र का आगमन सुनकर देखने की अभिलाषा से उसे कपिलपुरी में लाने के लिये ९ बार ९ मंत्री एक एक सहस्र सेना समेत भेजे। परन्तु वह सब उपदेश सुनकर भिक्षु के वेष में वहीं रहजाते रहे और राजा को उत्तर तक नहीं भेजा। तब राजा ने महामात्य कालूदायी को बुलाकर कहा कि तुम किसी तरह मेरे नयनों के तारे पुत्र को यहां लेआवो। और उसे भी एक सहस्र सेना साथ देकर भेजा। वह भी वहां पहुंच कर प्रव्रजित् होगये। फिर महामात्य ने कपिलवस्तु के मार्ग की खूब प्रशंसा करते हुए कहा प्रभो! यह वसन्त का समय वहां जाने का है। तब बुद्ध ने पूछा उदायि! तुम गमन मार्ग का इतना वर्णन क्यों करते हो। जिसपर उदायि ने उत्तर दिया स्वामिन! आ-

एके पिता आपके दर्शन करना चाहते हैं, आप ज्ञातियों का संग्रह करें, बुद्ध ने कहा अच्छा ! मैं ज्ञाति संग्रह करूंगा। तब २० सहस्र भिक्षुओं को साथ लेकर गौतम ने कपिल वस्तु की ओर प्रस्थान किया। यह रास्ता ६० योजन का था। प्रतिदिन एक एक योजन पर ठहरते हुए दो मास के पश्चात् वह राजधानी में पहुंचा। राजधानी राजकीय ठाठ से सजाई हुई थी और गाजे बाजे के साथ बुद्ध का स्वागत किया गया और उसे भिक्षुओं समेत न्यग्रोधाराम में ठहराया गया। वहां "यह सिद्धार्थ हमारा पुत्र है, हमारा पौत्र है" इत्यादि वार्तालाप करते हुए बड़ों ने नमस्कार नहीं किया प्रत्युत छोटे २ राजकुमारों को कहा कि तुम सिद्धार्थ का अभिवादन करो हम नहीं करते, और उन्हें पकड़ २ कर उस के आगे करने लगे। बुद्ध ने जब देखा कि ज्ञाति मुझे नमस्कार नहीं करना चाहते वह गण्डम्बवृक्ष के नीचे गया और अपने आप को आकाश में उठाया। इस अद्भुत कार्य को देखकर महाराज ने और फिर अन्य सब शाक्य वृद्धों ने बुद्ध को प्रणाम किया। तत्पश्चात् उस ने उपस्थित जनता को उपदेश दिया। दूसरे दिन बुद्ध यथाक्रम गृहस्थियों के गृहों मे जाकर भिक्षा माँग रहा था कि यशोधरा ने खिड़की से पति को देखा और राहुल पुत्रको लाकर कहा कि देख यह तेरा पिता जारहा है। और पुनः अति शीघ्र शुद्धोदन के पास जाकर कहा कि देख तेरा पुत्र घर २ में भीख मांगता फिर रहा है। यह कह कर वह अपने प्रासाद में चली आई। तब पिता कांपता हुआ बडे वेग से वहां पहुंचा और कहा "पुत्र ! यह भिक्षा याचन कर्म मेरे वंश का कर्म नहीं, अतः भिक्षाचरण मत करो मत करो। हे पुत्र ! हमारे वंश में पहले किसी ने कभी भिक्षा चरण नहीं किया" परन्तु बुद्ध उत्तर देता है "महाराज ! यह वंश आपका वंश है, मेरा वंश तो बुद्ध वंश है ऐसा कह कर बुद्ध वंश सुनाया और "उत्तिठ्ठे नप्पमज्जेय्य धम्मं सुचरितं चरे धम्मचारी सुखं सेति अस्मिंलोके परम्हि च" इस गाथा काउपदेश दिया। राजा की प्रार्थना पर बुद्ध २० सहस्र भिक्षुओं समेत उसके घर भोजनार्थ गया। भोजनानन्तर उपदेश दे चुकने के बाद उसने सोचा कि यदि मैं यशोधरा के घर न गया तो उसे अत्यन्त

दुःख होगा। अतः दोनों मुख्य श्रावक और सुद्धोदन के साथ बुद्ध उसके घर गया वहां पहुंचने पर राजा ने यशोधरा की तपस्या और पातिव्रत धर्म का सब हाल सुनाया। तब बुद्ध ने भी उस की बड़ी प्रशंसा की।

उसी दिन मायादेवी के भगिनी पुत्र नन्दकुमार के विवाह, अभिषेक और गृहप्रवेश यह तीनों मङ्गल कार्य थे परन्तु उस के पहले ही बुद्ध "नन्द" को अपने साथ न्यग्रोधाराम में लेगया और उसे भिक्षु बना दिया।

उसी दिन भोजनान्तर माता ने राहुल को कहा "जा बच्चा पिता से दायभाग मांग" वह भी तोतली आवाज में पिता तुम्हारी छाया मेरे लिए बड़ी सुखकारी है इत्यादि प्रिय वाणी बोलता हुआ और दायभाग दो दायभाग दो के शब्द कहता हुआ विहार तक उसी के पीछे २ चला गया वहां पहुंचने पर गौतम ने सोचा कि सांसारिक तुच्छ दायभाग क्या देता है अनन्तो दायभाग दो, और धर्म दायाद्य देकर उसे भी प्रव्रजित् कर लिया।

५. बुद्ध कपिल वस्तु से चल कर मार्ग में सर्वत्र धर्मोपदेश करता हुआ पुनः राजगृह में लौट आया और वहां शीतवन उपवन में ठहरा। उन्हीं दिनों सुदत्त नामक महा श्रेष्ठि जिसका दूसरा नाम अनाथ पिण्डिक भी था बहुतसे शकटों कर वाणिज्यव्यापार की वस्तुये लादकर श्रावस्ती से राजगृह में आया और वहां एक मित्र के घर ठहरा। मित्र से बुद्ध का आगमन सुनकर वह उसके पास गया और संघ समेत श्रावस्ती पधारने की प्रार्थना करके लौट आया तब उसने उनके विश्राम के लिये श्रावस्ती के मार्ग में प्रत्येक योजन पर बहुत सा धन व्यय करके विहार बनवाये और श्रावस्ती पहुंचने पर बुद्ध के योग्य निवास स्थान की तलाश में लगा। जेत राजकुमार का उद्यान देखकर उसे पसन्द किया और जितने स्थानमें एक करोड़ हिरण्य बिछगया,

उसे उतने दामों मे खरीद कर वहां जेतवन विहार बनवाया और बुद्ध के पास वहां पधारने के लिए दूत भेजे। तब गौतम ने संघ सहित राजगृह से श्रावस्ती की ओर प्रस्थान किया। श्रावस्तो में प्रवेश करते हुए का सुदत्त ने पूर्ण रीति से स्वागत किया। उस स्वागत में सबसे आगे चित्रविचित्र अनेक ध्वजों को लिए बालक जारहे थे। उनके पीछे स्त्रियें पुण्यघट उठाये जारही थीं। पुनः श्रेष्ठी की पत्नी अन्य अनेक कुलवती स्त्रियों के साथ पुण्य पात्र उठाये जाती थीं। और सब से पीछे सुदत्त अन्य अनेक श्रेष्ठियों के साथ ससङ्घ बुद्ध के साथ २ जारहा था। इस प्रकार वह बन में प्रविष्ट हुए। वहां पहुंचकर अनाथ पिण्डिक ने संकल्प पढ़ा कि मैं यह जेतवन विहार बुद्ध प्रमुख संघ को दान करता हूं और बुद्ध के हाथ पर कमण्डलु से जल छोड़ा। इस प्रकार विहार दान लेने के पश्चात् गौतम ने सब उपस्थित नर नाररियों को धर्मोपदेश दिया।

बुद्ध का यह नियम था कि प्रति वर्ष वर्षा ऋतु के तीन मास किसी एक स्थान में स्थिर रहकर विशेष नियम पालन करते हुए व्यतीत किया करता था। उन दिनों अन्यत्र कहीं भ्रमणार्थ नहीं जाता था। यही व्रत अन्य सब भिक्षुओं के लिये भी आवश्यक था। जिस का नाम वर्षावास है।

निम्नलिखित स्थानों मे क्रमशः प्रति वर्ष बुद्ध ने वर्षावास किया, शेष ९ मास देश देशान्तरों में घूमते हुए धर्म प्रचार करता रहा।

१म वर्ष वाराणसि के मृगदाय बन में जिसका दूसरा नाम ऋषिपत्तन था। २,३,४वर्ष राजगृहके वेलुवन में। ५म वर्ष वैशालिके महावन में। ६—मङ्कुल पर्वत। ७-शिलासन। ८—सिंशुमार पर्वत के भेस कलावन में। ९—कौशाम्बी का सिम्बलीवन।

१०—पारलेय्यवन। ११—नाल नामी ब्राह्मण ग्राम।
१२—वेरञ्ज नामी ब्राह्मण ग्राम। १३—चालिय पर्वत।
१४—जेतवन। १५—कपिल वस्तु। १६—आलवकपुर।

१७–राजगृह। १८, १९–चालिय पर्वत। २० राजगृह। इस प्रकार २० वर्ष अस्थिर वर्षावास करके पुनः शेष २५ वर्ष श्रावस्ती के जेतवन में व्यतीत किये। और काशी पर्वत से उदय हुआ २ बुद्ध दिवाकर ४५ वर्ष संसार रूपी आकाश मण्डल को अपनी धर्म प्रभा से देदीप्यमान करता हुआ ८० वर्ष की आयु में कुशिनारा के समीप अस्त हुआ

—:o:—

ओ३म्

जिनचरितं

नमो तस्स भगवतो अरहतो
सम्मासम्बुद्धस्स

१. कवि की प्रार्थना

१. उत्तमं उत्तमङ्गेन नमस्सित्वा महेसिनो
निब्बाणमधुदं पादपङ्कजं सज्जनालिनं

२. महामोहतमं लोके धंसेन्तं धम्मभाकरं
पातुभूतं महातेजं धम्मराजोदयाचले

३. जन्तुचित्तसरे जातं पसादकुमुदं सदा
बोधेन्तं सङ्घचन्दं च सीलोरुकिरणुज्जलं

४. तहिं तहिं सुवित्थिण्णं जिनस्स चरितं हितं
पवक्खामि समासेन सदानुस्सरणत्थिको

५. पणीतं त सरन्तानं दुल्लभम्पि सिवं पदं
अदुल्लभं भवे भोगपटिलाभम्हि का कथा

६. तस्मा तं भञ्ञमानं मे चित्तवुत्तपदक्कमं
सुन्दरं मधुरं सुद्धं सोतुसोतरसायनं

७. सोतहत्थपुटा सम्मा गहेत्वान निरन्तरं
अजरामरमिच्छन्ता साधवो ! परिभुञ्जथ

२. सुमेध की कथा

८. कप्पसतसहस्सस्स चतुन्नं चापि मत्थके
असंख्येय्यातमावासं सब्बदा पुञ्ञकामिनं
९. नानारतनसम्पन्नं नानाजनसमाकुलं
विचित्तापणसंकिण्णं तोरणग्घिकभूसितं
१०. युत्तं दसभि सद्देभि देविन्दपुरसन्निभं
पुरं अमरसंखातं अहोसि रुचिरं वरं
११. तहिं ब्रह्मन्वये जातो सब्बलोकाभिपूजितो
महादयो महापञ्ञो अभिरूपो मनोरमो
१२. सुमेधो नाम नामेन वेदसागरपारगू
कुमारोसि गुरूनं सो अवसाने जिनङ्कुरो
१३. रासिवड्ढकमच्चेन दस्सितं अमितं धनं
अनेकसतगब्भेसु निहितं तं उदिक्खिय
१४. धनसन्निचयं कत्वा अहो मय्हं पितादयो
गता मासकमेकम्पि नेवादाय दिवं इति
१५. संवेगमुपयातो व चिन्तेसीति गुणाकरो
धनसारं इमं गय्ह गन्तुं युत्तन्ति मे पण
१६. रहोगतो निसीदित्वा सुन्दरे निजमन्दिरे
देहे दोसे उदिक्खन्तो ओवदन्तोपि अत्तनो
१७. भेदनं तनुनो दुक्खं दुक्खो तस्सोदयोपि च
जातिधम्मो जराधम्मो व्याधिधम्मो अहं इति
१८. एवमादीभि देहस्मिं दिस्वा दोसे अनेकधा
पुरे भेरिं चरापेत्वा आरोचेत्वान राजिनो
१९. भेरीनादसुगन्धेन याचकालिगमागते

दानकिञ्जक्खओघेन सञ्जादं पीणयी लतं

२०. दानग्गहिमविन्दूनं निपातेनापि धंसनं
अयातं तं विलोकेत्वा रतनम्बुजकाननं

२१. रुदतो ञातिसंघस्स जलितानलकानना
गजिन्दो विय गेहम्हा निक्खमित्वा मनोरमा

३. हिमालय का वर्णन
२२. महन्तं सो महावीरो उपगञ्छि हिमालयं
हरिचन्दनकप्पूरागरुगन्धेहि वासितं

२३. सुफुल्लचम्पकासोकपाटलितिलकेहि च
पूगपुन्नागनागादि पादपेहि च मण्डितं

२४. सीहव्यग्घतरच्छेहि इभदीपिकपीभि च
तुरङ्गमादि नेकेहि मिगेहि च समाकुलं

२५. सालिका रविहंसेहि हंस कोञ्च सुवेहिच
कपोत करवीकादि सकुन्तेहि च कूजितम्

२६. यक्खरक्खस गन्धब्ब देव दानवकेहि च
सिद्ध विज्जाधरादीहि भूतेहि च निसेवितं

२७. मनोसीलिन्दनीलोरुचारुपब्बत पन्तिभि
सञ्झुहेमादिनेकेहि भूधरेहि च भासुरं

२८. सुवण्ण मणि सोपान नेक तित्थसरेहि च
सोभितं तत्थ कीळन्त नेक देवङ्गनाहि च

२९. सीत सीकर सञ्छन्नमालकेहि च मण्डितं
किण्णरोरग रङ्गेहि रम्मेहि च विराजितं

३०. सिखण्डिसण्ड नच्चेहि लतानं मण्डपेहि च
सेत वालुकसञ्छन्नमालकेहि च मण्डितं

३१. सुवण्णमणिमुत्तादि अनेकरतनाकरं
इच्छन्तानं जनालीनं पुञ्ञकिञ्जक्खमालयं
३२. तमज्झोगय्ह सो धीरो सहस्सक्खेन मापिते
दिस्वा इसिपरिक्खारे पण्णसालवरे तहिं
३३. इसिवेसं गहेत्वान विहरन्तो समाहितो
सत्ताहब्भन्तरे पञ्चअभिञ्ञा द्वविधापि च
३४. उप्पादेत्वा समापत्ति सुखेनेव तपोधनो
नभसा दिवसेकस्मिं गच्छन्तो जनतं इसि
३५. सोधेन्त मञ्जसं दिस्वा ओतरित्वा नभा तहिं
इति तं जनतं पुच्छि "कस्मा सोधेथ अञ्जसं"?
३६. "सुमेध! त्वं न जानासि? दीपङ्करतथागतो
सम्बोधि मुत्तमं पत्वा धम्मचक्कमनुत्तरं
३७. पवत्तेत्वान लोकस्स करोन्तो धम्मसङ्गहं
रम्मंरम्मपुरं पत्वा वसतीह सुदस्सने
३८. भिक्खुसतसहस्सेहि चतूहि विमलेहि तं
निमन्तयिम्ह दानेन मयं लोकेकनायकं
३९. तस्स आगमनत्थाय मग्गं सोधेम चक्खुम!"
इति सोतस्स सोतस्स सुखं देन्तो जनोऽब्रवी
४०. बुद्धोतिवचनं सुत्वा पीतियोदग्गमानसो
सकभावेन सण्ठातुं नेव सक्खि गुणाकरो
४१. तेनारद्धञ्जसा धीरो याचित्वान पदेसकं
लभित्वा विसमं ठानं समं कातुं समारभि

४२. नालङ्कतयेव तहिं पदेमे
लोकेकनाथो सनरामरेहि
सम्पूजितो लोकहितो महेसि
वसीहि सद्धिं पटिपज्जि मग्गं
४३. छब्बण्णरंसिजालेहि पज्जलन्तं तथागतं
आगच्छन्तं तहिं दिस्वा मोदमानो विचिन्तयि
४४. यन्नूनिमस्स धीरस्स मेतुं कत्वान कद्दमे
सक्कत्तानं निपज्जेय्यं ससङ्घस्स महेसिनो
४५. दीघरत्त मलं तं मे हिताय च सुखाय च
इच्चेवं चिन्तयित्वान निपन्नो सो जिनङ्कुरो
४६. पबोधेत्वान दिस्वान चारुलोचनपङ्कजे
पुन पेवं विचिन्तेसि निपन्नो धितिमा तहिं
४७. इच्छेय्यं चेहमज्जेव हन्त्वा नन्तरणे भवा
सङ्घस्स नवको भूत्वा पविसेय्यं पुरं वरं
४८. किमञ्ञातक वेसेन क्लेसनिब्बापणेन मे
अयं बुद्धोवहं बुद्धो भूत्वा लोके अनुत्तरो
४९. जनतं धम्मनावाय तारेत्वान भवण्णवा
निब्बाणपुर मानेत्वा सेय्यं मे परिनिब्बुतं
५०. इच्चेवं चिन्तयित्वान निपन्नो कद्दमे तहिं
सुवण्ण कदलीक्खन्धसन्निभो सो तिसोभति
५१. छब्बण्णरासीहि विराजमानं
दिस्वो मनुञ्ञं सुगतत्तभावं
सञ्जातपीतिहि उदग्गचित्तो
सम्बोधिया छन्द मकासीधीरो

५२. आगन्त्वान तहिं ठानं इसिं पङ्के निपन्नकं
लोकस्स सेतुभूतोपि सेतुभूतं तमत्तमो

५३. दिस्वा उस्सीसके तस्स ठत्वा लोकेकसेतुनो
लोकेकलोचनो धीरो दीपङ्कर तथागतो

५४. गोतमो नाम नामेन सम्बुद्धोयं अनागते
भविस्सतीति व्याकासी सावके च पुरादिके

५५. इदं वत्वान कत्वान ससङ्घो तं पदक्खिणं
पूजेसि अट्ठमुट्ठीहि कुसुमेहि गुणप्पियो

५६. इति कातून पायासि ससङ्घो लोकनायको
रम्मकं नाम नगरं रम्मारामालयालयं

५७. जिनस्स वचनं सुत्वा उट्ठहित्वान पङ्कतो
मुदितो देवसङ्घेहि कुसुमादीहि पूजितो

४. सुमेधका बुद्धत्वके लिए यत्न

५८. पल्लङ्कं माभुजित्वान निसीदि कुसुमासने
महातपो महापञ्ञो सुमेधो दमितिन्द्रियो

५९. देवा दससहस्सेसु चक्कवाळेसु मोदिता
अभित्थविंसु तं धीरं निसिन्नं कुसुमासने

६०. निसन्नो उपधारेसि धम्मे बुद्धकरे तदा
किमुद्धं वा अधोवापि दिसासु विदिसासु च

६१. इच्चेवं विचिनन्तो सो सकलं धम्मधातुकं
अद्दक्खि सकसन्ताने पठमं दानपारमी

६२. एवमेवं गवेसन्तो उत्तरिं पारमी विदु
सब्बा पारमियो दिस्वा अत्तनो ञानचक्खुना

६३. संसारे संसरन्तो सोबहुं दुक्खं तितिक्खिय
गवेसन्तो मग्गं सन्तो पूरेत्वा दानपारमी

६४. सत्तानं कप्परुक्खोव चिन्तामणिव कामदो
इच्छितिच्छित मन्नादिं ददन्तो ददतं वरो

६५. तारकाहि बहुं कत्वा नभे चारुविलोचने
उप्पाटेत्वा ददं धीरो याचकानं पमोदितो

६६. पहिया पंसुतो चापि समुद्दोदकतोधिकं
ददं सरीरमंसं च लोहितम्पि च अत्तनो

६७. मोलिना लङ्कते सीसे धिकं कत्वा सिनेरुतो
कम्पयित्वा महिं देन्तो सुते चापि सकङ्गना

६८. सीलनेक्खम्मपञ्ञादी पूरेत्वा सब्बपारमी
वेस्सन्तरत्तभावे वम्पत्वा तम्हा चुतोपण

६९. उप्पज्जित्वा सुरावासे सुन्दरे तुसिते पुरे
वसन्तो सुचिरं कालं भुत्वाना नन्तसम्पदं

५. सिद्धार्थ का मातृगर्भ मे आना

७०. कतञ्जलीहि देवेहि याचितो दिपदुत्तमो
'सम्बोधाय महावीर! कालो तुय्हन्ति' आदिना

७१. विलोकेत्वान कालादिं ञत्वा कालन्ति बोधिया
पटिञ्ञं देवसङ्घस्स दत्वा नन्दनकाननं

७२. गन्त्वान देवसङ्घेहि सुगतिं गच्छि तो चुतो
अभित्थुतो महापञ्ञा चवित्वान ततो इध

७३. सुसज्जितङ्गोरु तुरङ्गमाकुले
विचित्तनानापणपण्यसम्पदे

मनोरमुत्तुङ्ग गजिन्दराजिते
विभूसिते तोरणकेतुरासिहि
७४. अलङ्कतट्टाल विसालमालये
सुगोपुरे सुन्दर सुन्दरालये
सुदस्सनीये कपिलव्हयेपुरे
पुरिन्ददस्सापि पुरस्स हासके
७५. भूपालमोलिरतनालि निसेवितङ्घि
पङ्केरुहं विमलनेक गुणाधिवासं
ओक्काकराजकुलकेतुम नाथनाथं
सुद्धोदनं नरपतिं पवरं पटिच्च
७६. सो सज्झुदाम धवलामल दस्सनीय
सोण्डाय संगहित सेतवरारविन्दं
चन्दावदात वरवारणराजवण्णं
सन्दस्सयित्व सुपिनेन विसालपञ्ञो
७७. बिम्बाधराय विकचूज्जललोचनाय
देविन्द चाप रतिवड्ढनभूलताय
सम्पुण्ण सोम्मविमलिन्दु वराननाय
सोवण्णहंसयुगचारु पयोधराय
७८. पादारविन्दकर पल्लवसुन्दराय
सोवण्ण वण्ण तनुवण्ण विराजिताय
सीलादिनेक गुणभूसित भूसिताय
मायाय राजवनितायुपगञ्छि कुच्छि
७९. पटिसन्धिक्खणे तस्स जातानेक विधब्भुता
अथायं महितारक्खो नरेहि अमरेहि च

८०. मनुञ्ञरत्तम्बुजकण्णिकाय
मासीनसिङ्गी पटिमा व रम्मो
सुवण्णवण्णो दिपदानमिन्दो
पल्लङ्कमा भुञ्जिय मातुगब्भे

८१. मणिम्हि विप्पसन्नम्हि रत्तसुत्तमिवावुतं
मातुचित्तम्बुजं धीरो बोधयन्तो पदिस्सति

१. सिद्धार्थ का जन्म

८२. दसमासावसानम्हि देवी रञ्ञो कथेसिदं
मयहं ञातिघरं देव ! गन्तुमिच्छामहं''इति

८३. रञ्ञाथ समनुञ्ञाता गच्छन्ती कुलमत्तनो
महता परिहारेन दिब्बङ्गस समङ्गसे

८४. सुरभिकुसुम सण्डालङ्कतस्सालसण्ड
समद भमरमाला गीयमानग्गनाद
नयन विहगसङ्घे अव्हयन्तं व दिस्वा
विपुलरतिनिवासं लुम्बिनी काननं तं

८५. विपुलतररतिं सा तम्हि कानून रम्मे
अमर युवतीलीला चारुलीलाभिरामा
विकसितवरसालस्सो पगन्त्वान मूलं
सय मतिनमितेकं सालसाखं अगण्हि

८६. तस्मिं खणे कम्मजमालुत स्सा
चलिंसु सानीहि परिक्खिपित्वा
देवीं जनो तं अभिपालयन्तो
तम्हा पटिक्कम्म सुसण्ठिता थ

८७. सा चारुहेमवलयादि विभूसितेन
अच्चन्त तम्ब नखरंसि समुज्जलेन

तूलातिकोमल सुरत्त करेन साखं
ओलम्ब तत्थ मजनेसि ठिता व धी

८८. सोवण्ण वण्ण तनुवण्ण विराजमानं
नेत्ताभिराम मतुलं अतुलाय गब्भा
सम्मा पसारितकरङ्घि युगाभिरामं
पङ्केरुहा कणक हंस मिवोत्तरन्तं

८९. ब्रह्मा मनग्घरति वड्ढन हेमजाल
मादाय तेन उपगम्म पटिग्गहेत्वा
सम्मोद देवि ! अय मग्गतरो सुतो ते
जातोति ताय पुरतो कथयिंसु ठत्वा

९० जायन्ति सेसमनुजा मल मक्खितङ्गा
जातो पनेस पवरो दिपदानमिन्दो
अच्चन्त सण्ह मलकासिक वत्थकम्हि
निक्खित्त नग्घतरचारु मणीव सुद्धो

९१. एवम्पि सन्ते नभतो पगन्त्वा
द्वे वारिधारा सुभगस्स देहे
जनेन्ती देहेपि उतुं मनुञ्ञं
गाहापयुं मङ्गल किच्चताय

९२. तेसं कग रतिकरा अजिनस्स वेणी
मादाय तेन उपगम्म पटिग्गहेसुं
देवा दुकूलमय चुम्बटकेन वीरं
तेसं करा नरवरा नरसीहराजं

९३. तेसंकरा रतिकरो विमलो व चन्दो
चक्कङ्कितोरु चरणेहि महीतलस्मिं

सम्मा पतिट्ठिय पुरत्थिमकं दिसं सो
ओलोकयित्थ कमलायतलोचनेहि

६४. एकङ्गना नेकसतानि चक्क --
वालान हेसुं सनरामरा थ
धीरं सुगन्ध प्पभुतीहि तेसु
सम्पूजयन्ता इदमब्रवींसु

६५. नत्थे त्थ तुम्हे हि समो सुधीस !
एको पुमा प ग्गतरो कुतो ति
एवं दिसा लोकिय लोकनाथो
न पेक्खमानो सदिसम्पि एकं

६६. उत्तराभिमुखो सत्तपदं गन्त्वा कथेसिदं
अग्गोहमस्मि लोकस्स जेट्ठो सेट्ठोति आदिकं

६७. अनञ्ञसाधारणनाद मुत्तमं
सुरा सुर ब्रह्म नरिन्द पूजितं
नरिन्द मादाय गतो महाजनो
सुसज्जितं तं कपिलव्हयं पुरं

७.जन्मकाल में अद्भुत घटनायें

६८. भारातिभार नगपादप मेरुराजं
सब्बम्पि सागरजलं वहितुं समत्थं
जातक्खणेपि गुणभारम सय्हमाना
सङ्कम्पयीव पठवी पवरस्स तस्स

६९. रमिंसु सोणा हरिणेहि सद्धिं
काका उलूकेहि मुदग्गदग्गा
सुवण्णराजूहि महोरगा च
मज्जारसङ्घापि च उन्दुरेहि

१००. मिगा मिगिन्देहि समागमिंसु
पुत्तेहि मातापितरो यथेव
नावा विदेसम्पि गता सदेसं
गताव कण्डं सरभङ्गसत्थु

१०१. नानाविरागुप्पलपङ्कजेहि
विभूसितो सन्त तरङ्गमालो
महण्णवो आसि तहिं जलम्पि
अच्चन्त सातत्त मुपगमासि

१०२. सुफुल्ल ओलम्बक पङ्कजेहि
समाकुलत्तं गगनं अगच्छि
जहिंसु पक्खी गमनं नभम्हि
ठिता व सिन्धूपि असन्दमाना

१०३. अकाल मेघ प्पियसङ्गमेन
महीवधू सोम्मतमा अहोसि
मरूहि वस्सापित नेकपुप्फ-
विभूसितेना तिविभूसिता व

१०४. सुफुल्लमाला भरणाभिरामा
लतङ्गना लिङ्गित पादपिन्दा
सुगन्ध किञ्जक्ख वरम्बरेहि
दिसङ्गनायो अतिसोभयिंसु

१०५. सुगन्धधूपेहि नभं असेसं
पवासितं रम्मतरं अहोसि
सुरासुरिन्दा छन्न वेसधारी
सङ्गीतियुत्ता विचरिंसु सब्बे

१०६ पियंवदा सब्बजना अहेसुं
दिसा असेसा पि च विप्पसन्ना
गजा तिगज्जिंसु नदिंसु सीहा
हेसारवो चासि तुरङ्गमानं

१०७. मनुञ्ञगन्धो मुदुसीतलानिलो
सुखप्पदं वायि असेसजन्तुनो
अनेकरोगा दुपपीळितङ्गिनो
ततो पमुत्ता सुखिनो सियुं जना

१०८. विजम्भमानामित वालवीजनि
प्पभाभिरामं भुवनं अहोसि
महीं हि भेत्वा चुदकानि सन्दयुं
गमिंसु खुज्जा उजुगत्ततं जना

१०९. अन्धा पङ्गुलनच्चानि लीलोपेनानि पेक्खयुं
सुणंसु वधिरा मूगगीतियो पि मनोरमा

११०. सीतलत्त मुपा गञ्छि अवीचग्गि पि तावदे
मोदिंसु जलजातस्मिं जन्तवो पहसिंसु च

१११. खुप्पिपासाभिभूतानं पेतानं आसि भोजनं
लोकन्तरे पि आलोको अन्धकारनिरन्तरे

११२. अतिरेकतरा तारावळिचन्ददिवाकरा
विरोचिंसु नभे भूमिगतानि रतनानि च

११३. महीतलादयो भेत्वा निक्खम्म उपरूपरि
विचित्तपञ्चवण्णासुं सुफुल्लविपुलम्बुजा

११४. दुन्दुभादी चलङ्कारा अवादित अघट्टिता
अच्चन्तमधुरं नादं पमुञ्चिंसु महीतले

११५. बद्धा सङ्खलिकादीभि मुञ्चिंसु मनुजा ततो
भुवने भवन द्वार कवाटा विवटा सयं

११६ चेलुक्खेपादयो चापि पवत्तो·ता पमोदिता
कीळिंसु देवसङ्घा ते तावतिंसालये तदा

११७. पुरे कपिलवत्थुम्हि जातो सुद्धोदनत्रजो
निसज्ज बोधिमण्डे ति अयं बुद्धो भविस्सति

११८. इद्धिमन्तो महापञ्ञो कालदेवलतापसो
सुद्धोदन नरिन्दस्स धीमतो सो कुलूपगो

११९. भोजनस्सावसानम्हि तावतिंसालयं गतो
गन्त्वा दिवाविहाराय निसन्नो भुवने तहिं

१२०. छनवेसं गहेत्वान कीळन्ते ते उदिक्खिय
सन्तोस कारणं पुच्छि तेसं तेपि तमब्रवुं

१२१. सुत्वा तं तत्तो तम्हा पीतियोदग्गमानसो
तावदेवोप ग·त्वान सुद्धोदननिवेसनं

१२२. पविसित्वा सुपञ्ञत्तो निसिन्नो आसने इसि
जातो किर महाराज पुत्तो ते नुत्तरो सुधि

१२३. दट्ठु मिच्छामहं तं ति आह राजा अलङ्कतं
आनापेत्वा कुमारं तं वन्दापेतु मुपागमी

१२४. कुमारभूतस्सपि तावदेव
गुणानुभावेन मनोरमानि
पादारविन्दा परिवत्तिय ग्गा
पतिट्ठिता मुद्धनि तापसस्स

१२५. तेनत्तभावेन नरुत्तमस्स
न वन्दितब्बो तिभवे पि कोचि

तिलोकनाथस्स सचे हि सीसं
तपस्सिनो पादतले ठपेय्य

१२६. फालेय्य मुद्धा खलु तापसस्स
पगय्ह सो अञ्जलि मुत्तमस्स
अट्ठासि धीरस्स गुणण्णवस्स
नासेतु मत्तान मयुत्तक न्ति

१२७. दिस्वान तं अच्छरियं नरिन्दा
देवातिदेवस्स सकत्रजस्स
पादारविन्दा नभिवन्दि तुट्ठो
विचित्तचक्कङ्कितकोमलानि

१२८ यदा सि रञ्ञो पुथुवप्पमङ्गलं
तदा पुरं देवपुरं व सज्जितं
विभूसिता ता जनता मनोरमा
समागता तस्स निकेत मुत्तमं

१२९. विभूसितङ्गो जनताहि ताहि सो
पुरक्खतो भूसनभूसितत्रजं
तमा दयित्वा तुलवप्पमङ्गलं
सुरिन्दलीलाय गतो नरिस्सरो

१३०. नानाविरागुज्जल चारु सानि
परिक्खिते कम्हि च जम्बुमूले
सयापयित्वा बहि मङ्गलं तं
उदिक्खितुं धातिगणा गमिंसु

१३१. सुवण्णतारादि विराजमान
वितान जोतुज्जल जम्बुमूले

निसज्ज धीरो सयने मनुञ्ञे
झानं समापज्जि कतावकासो

१३२. सुवण्णबिम्बं विय तं निसिन्नं
छायं च तस्सा ठितमेव दिस्वा
तम ब्रवी धातिजनो पगन्त्वा
पुत्तस्स ते अब्भुत मीदिसन्ति

१३३. विसुद्धचन्दानन भासुरस्स
सुत्वान तं पङ्कजलोचनस्स
सवन्दनं मे दुतियन्ति वत्वा
पुत्तस्सपादे सिरसा भिवन्दि

१३४. तदञ्ञानि पि लोकम्हि जाता नेकविधब्भुता
दस्सिता मे समासेन गन्थवित्थारभीरुना

८—कपिल वस्तु का वर्णन

१३५. यस्मिं विचित्तमणि मण्डित मन्दिरानं
नानावितान सयनासन मण्डितानं
निस्सेणि सेणि पुथुभूमिक भूसितानं
तिन्नं उतून मनुरूप मलङ्कतानं

१३६. सिङ्गेसु रंसिनिकरा सुरमन्दिरानं
सिङ्गेसु रंसि मपहासकरा व निच्चं
आदिच्चरंसि विय पङ्कजकाननानि
लोकाननम्बुजवनानि विकासयन्ति

१३७. नानामणि विचित्ताहि भित्तिहि वनिता सदा
विनापि दप्पणच्छायं पसाधेन्ति सकं तनुं

१३८. केलास नग सङ्कासं विलोचन रसायनं
सुधालङ्कत पाकार वलयं यत्थ दिस्सते

१३९. इन्द नीलोरु वलयं नानारतनभूसितं
दिस्सते व सदा यस्मि परिखा नेकपङ्कजा

९—गौतम का घर से निकलना

१४०. पत्वान वुद्धि विपुले मनुञ्ञे
भुत्वान कामे च तहिं वसन्तो
गच्छं तिलोकेक विलोचनो सो
उय्यान कीळाय महापथम्हि

१४१. कमेन जिण्णं व्यधितं मतं च
दिस्वान रूपं तिभवे विरत्तो
मनोरमं पब्बजितं च रूपं
कत्वा रतिं तम्हि चतुत्थवारे

१४२. सुफुल्लनानातरुसण्डमण्डितं
सिखण्डिसण्डादि दिजूपकूजितं
सुदस्सनीयं विय नन्दनं वनं
मनोरमुय्यान मगा महायसो

१४३. सुरङ्गना सुन्दरसुन्दरीनं
मनोरमे वादितनच्चगीते
सुरिन्दलीलाय तहिं नरिन्दो
रमित्व कालं दिपदानमिन्दो

१४४. आभूजित्वान पल्लङ्कं निसिन्नो रुचिरासने
कारापेतु मचिन्तेसि देहभूसन मत्तनो

१४५. तस्स चित्तं विदित्वान विस्सकम्मस्सि दं ब्रवि
अलङ्करोहि सिद्धत्थ मिति देवानमिस्सरो

१४६. तेनानत्तो पगन्त्वान विस्सकम्मो यसस्सिनो

दसदुस्स सहस्सेहि सीसं वेठेसि सोभनं

१४७. तनुं मनुञ्ञम्पि अकासि सोभनं
अनञ्ञ साधारणलक्खणुज्जलं
विचित्त नानुत्तम भूसनेहि सो
सुगन्धिगन्धु प्पलचन्दनादिना

१४८. विभूसितो तेन विभूसितङ्गिना
तहिं निसिन्नो विमले सिलातले
सुरङ्गना सन्निभ सुन्दरीहि सो
पुरक्खतो देवपती व सोभति

१४९. सुद्धोदन नरिन्देन पेसितं सासनुत्तमं
पुत्तो ते पुत्त! जातो ति सुत्वान दिपदुत्तमो

१५०. मम ज्ज बन्धनं जातं इति वत्वान तावदे
समिद्धं सब्बकामेहि अगमा सुन्दरं पुरं

१५१. ठिता उपरि पासादे किसागोतमि तं तदा
राजेन्तं सतरंसिं व राजं दिस्वा कथेसि दं

१५२. येसं सूनु अयं धीरो या च जाया इमस्स तु
ते सब्बे निब्बुता नून सदा नूनगुणस्स वे

२५३. इती दिसं गिरं सुत्वा मनुञ्ञं ताय भासितं
सञ्जातपीतिया पीनो गच्छमानो सकालयं

१५४. सीतलं विमलं हारिं हारं तं रतिवड्ढनं
पेसेत्वा सन्तिकं तस्सा ओमुञ्चित्वान कण्ठतो

१५५. पासाद मभिरूहित्वा वेजयन्तं व सुन्दरं
निपज्जि देवराजा व सयने सो महारहे

१५६. सुन्दरी तं पुरक्खत्वा सुरसुन्दरिसन्निभा
पयोजयिंसु नच्चानि हितानि विविधानि च

१५७. पब्बज्जाभिरतो धीरो पञ्चकामे निरालयो
तादिसे नच्चगीतेपि न रमित्वा मनोरमे

१५८. निपन्नो विस्समित्वान ईसकं सयने तहिं
पल्लङ्क माभुजित्वान महावीरो महीपति

१५९. निसिन्नो व नेकप्पकारं विकारं
पदिस्वान निद्दूपगानं वधूनं
गमिस्सामि दानी ति उब्बिग्गचित्तो
भवे द्वारमूलं पगन्त्वान रम्मं

१६०. ठपेत्वान सीसं सुमुम्मारकस्मिं
सुणिस्सामि धीरस्स सद्दं ति तस्मिं
निपन्नं सुदन्तं पसादा वहन्तं
सहायं अमच्चं महापुञ्ञमन्तं

१६१. अच्छन्नसत्तनं छन्नं आमन्तेत्वा कथेसि दं
आनेहि इति कप्पेत्वा कन्थकं नाम सिन्धवं

१६२. सो छन्नो पतिगण्हित्वा तं गिरं तेन भासितं
ततो गन्त्वान कप्पेत्वा सीघ मानेसि सिन्धवं

१६३. अभिनिक्खमणं तस्स ञत्वा वरतुरङ्गमो
तेन सज्जियमानो सो हेसारव मुदीरयि

१६४. पत्थरित्वान गच्छन्तं सद्दं तं सकलं पुरं
सब्बे सुरगणा तस्मिं सोतुं नादंसु कस्सचि

१६५. अथ सो सज्जनानन्दो उत्तमं पुत्त मत्तनो

पस्सित्वा पठमं गन्त्वा पच्छा बुद्धो भवाम हं
१६६. चिन्तयित्वान एवम्पि गन्त्वा जायानिवेसनं
उपेत्वा पाद दुम्मारे गीवं अन्तो पवेसिय
१६७. कुसुमेहि समाकिण्णे देविन्दसयनूपमे
निपन्नं मातुया सद्धिं सयने सक मत्रजं
१६८. विलोकेत्वान चि·तेसि इति लोकेकनायको
सचाहं देविया बाहु मपनेत्वा मम त्रजं
१६९. गण्हिस्साम न्तरायम्पि करेय्य गमनस्स मे
पबुज्झि·वा मह·तेन पेमेने सा यसोधरा
१७०. बुद्धो भुत्वा पुनागम्म पस्सिस्सामी ति अत्रजं
नराधिपो तदा तम्हा पासादतलतो त्तरि
१७१. पेसलानन करङ्घिपङ्कजा
हासफेन भमुवीचिभासुरा
नेत्तनीलकमला यसोधरा
कोमुदी व नयनालिपत्थिता
१७२. समत्थो अस्स को तस्या जहितुं देहसम्पदं
वि·दमानो विना धीरं ठित पारमिमुद्धनि
१७३. अस्सा सामि मया नीतो कालं जान रथेसभ
इति अब्रवि छन्नो सो भूपालस्स यसस्सिनो
१७४. महीपति तदा सुत्वा छन्नेनो.दीरितं गिरं
पासादा ओतरित्वान गन्त्वा क·थकसन्तिकं
१७५. तस्मिदं वचन भासि सब्बु सत्तहिते रतो
क·थक ज्जेकरत्तिं मं तारेहि सनरामरं
१७६. लोक मुत्तारयिस्सामि बुद्धो भुत्वा अनुत्तरो

भवसागरतो घोरजरादि मकरा करा

१७७. इति वत्वा तमारय्ह सिन्धवं सङ्खसन्निभं
गाहापेत्वान छन्नेन सुदण्हं तस्स वालधिं

१७८. पत्वान सो महद्वारं समीपं समचिन्तयि
भवेय्य विवटं द्वारं येन केनचि नो सचे

१७९. वालधिं गहितेनेव सद्धिं छन्नेन कन्थकं
निप्पीळयित्वा सत्थीहि इम मच्चुग्गतं सुभं
उल्लङ्घित्वान पाकारं गच्छामी ति महब्बलो

१८०. तथा थामबलूपेतो छन्नोपि तुरगुत्तमो
विसुं विसुं विचिन्तेसुं पाकारं समतिक्कमं

१८१. तस्स चित्तं विदित्वान मोदिता गमने सुभे
विवरिंसु तदा द्वारं द्वारे धिग्गहिता सुरा

१० -मार का प्रलोभन १८२. तं सिद्धत्थमसिद्धत्थं करिस्सामी ति चिन्तिय
आगन्त्वा तस्सि दं भासि अन्तलिक्खे ठितन्तको

१८३. मा निक्खम महावीर ! इतो ते सत्तमे दिने
दिब्बं तु चक्करतनं अद्धा पातुभविस्सति

१८४. इच्चेवं वुच्चमानो सो अन्तकेन महायमो
कोसि त्वमी ति तं भासि मारो च त्तान मादिसि

१८५. मार ! जानामहं मय्हं दिब्बचक्कस्स सम्भवं
गच्छ त्वमिध मा तिट्ठ नम्हि रज्जेन मत्थिको

१८६. सब्बं दससहस्सम्पि लोकधातुमहं पन
उन्नादेत्वा भविस्सामि बुद्धो लोकेकनायको

१८७. एवं वुत्ते महासत्ते अत्तनो गिर मुत्तरिं

गाहापेतु मसकोन्तो तत्थेव न्तरधायि सो

१८८. पापिमस्स इदं वत्वा चक्कवत्ति सिरिम्पि च
पहाय खेलपिण्डं व पच्चूससमये वसिं

१८९. गच्छन्त मभिपूजेतुं समागन्त्वान तावदे
रतनुक्का सहस्सानि धारयन्ता मरू तहिं

१९०. पच्छतो पुरतो तस्स उभो पस्सेसु गच्छरे
तथेव अभिपूजेन्ता सुवण्णा च महोरगा

१९१. सुविपुल सुरसेना चारुलीला भिरामा
कुसुमसलिलधारा वस्सयन्ता नभम्हा
इह हि दससहस्सी चक्कवाळा गता ता
सुखुमतनुतमे तो दग्गुदग्गा चरन्ति

१९२. यस्मिं सुगन्ध वरपफ सुधूपचुण्ण
हेमद्धज प्पभुति भासुर चारुमग्गे
गच्छं महाजव वरङ्ग तुरङ्गराजा
गन्तुं न सक्खि जवनो कुसुमादिलग्गा

१९३. इत्थं तम्हि पथे रम्मे वत्तमाने महामहे
गच्छन्तो रत्तिसेसेन तिंसयोजन मञ्जसे

१९४. पत्वा नोमा नदीतीरं पिट्ठितो तुरगस्स सो
ओतरित्वान विमले सीतले सिकतातले

१९५. विस्समित्वा इदं वत्वा गच्छाही ति सकं पुरं
आभरणानि आदाय छन्नं मं तुरगम्पि च

११—भिक्खुवेष धारण १९६. ठितो तस्मिं महावीरो अच्चन्त निसितासिना
सुगन्धवासितं मोळिं छेत्वानु क्खिपि अम्बरे

१९७. चारुहेम सुमुग्गेन केसधातुं नभुग्गतं

पूजनत्थं सहस्सक्खो सिरसा सम्पटिच्छिय

१९८. तिलोचनानन्दकरिन्द नील
मवेहि चूळामणिचेतियं सो
पतिट्ठपेसा मल तावतिंसे
उब्बेधतो योजनमत्त मग्गं

१९९. उत्तमट्ठ परिक्खारे धारेत्वा ब्रह्मुणा भतं
अम्बरे व पविज्झित्थ वरं दुस्स युगम्पि च

२००. तमादाय महाब्रह्मा ब्रह्मलोके मनोरमं
द्वादस योजनुब्बेधं दुस्सथूपं अकारयि

१२—राज गृह जाना

२०१. नामेना नुपियं नाम गन्त्वा अम्बवनं तहिं
सत्ताहं वीतिनामेत्वा पब्बज्जासुखतो ततो

२०२. गन्त्वाने कदिनेने व तिंसयोजन मञ्जसं
पत्वा राजगहं धीरो पिण्डाय चरि सुब्बतो

२०३. इन्दनीलसिलाया पि कता पाकारगोपुरा
हेमाचला व दिस्सन्ति तस्सा भाहि तहिं तदा

२०४. कोयं सक्को नु खो ब्रह्मा मारो नागो तिआदिना
भीय्यो कोतूहल प्पत्तो पदिस्वा तं महाजनो

२०५. पविसित्वा गहेतून भत्तं यापन मत्तकं
युगमत्तं व पेक्खन्तो गच्छन्तो राजवीथियं

२०६. मथितं मेरुमन्थेन समुद्दं व महाजनं
तम्हा सो आकुलीकत्वा गन्त्वा पण्डवपब्बतं

२०७. ततो तस्सेव छायाय भूमिभागे मनोरमे
निसिन्नो मिस्सकं भत्तं परिभुञ्जितु मारभि
२०८. पच्चवेक्खण मन्तेन अन्तसप्पं निवारिय
देहवम्मिकतो धीरो निक्खमन्तं महब्बलो
२०९. भुत्वान बिम्बिसारेन नरिन्देन नरासभो
निमन्तितो पि रज्जेन उपगन्त्वान नेकधा
२१०. पटिक्खिपिय तं रज्जं अथ तेना भियाचितो
धम्मं देसेहि मय्हं ति बुद्धो भुत्वा अनुत्तरो

१३ -काठिन तप करना २११. दत्वा पटिञ्ञं मनुजाधिपस्स
धीरो पगन्त्वान पधानभूमिं
अनञ्ञ साधारणदुक्करानि
कत्वा ततो किञ्चि अपस्समानो
२१२. ओळारिकन्नपानानि भुञ्जित्वा देहसम्पदं
पत्वा जपाल निग्रोध मूल पत्तो सुरो विय
२१३. पुरत्थाभिमुखो भुत्वा निसिन्नो सि जुतिन्धरो
देहवण्णेहि निग्रोधो हेमवण्णो सि तस्स सो
२१४. समिद्धप्पत्थना एका सुजाता नाम सुन्दरी
हेमपातिं सपायासं सीसेना दाय ओनता
२१५. तस्मिं अधिग्गहीतस्स रुक्खदेवस्स तावदे
बलिं दम्मी ति गन्त्वान दिस्वा तं दिपदुत्तमं
२१६. देवो ति सञ्ञाय उदग्गचित्ता
पायास पातिं पवरं स दत्वा
आसिंसना इज्झि यथा हि मय्हं

तुम्हम्पि सा सामि समिज्झतू ति

२१७. इच्चेवं वचनं वत्वा गता तम्हा वरङ्गना
अथ पायासपातिं तं गहेत्वा मुनिपुङ्गवो

२१८. गन्त्वा नेरञ्जरा तीरं भुत्वा तं वरभोजनं
पटिसोतं पविस्सज्जी तस्सा पातिं मनोरमं

१४. बोधि वृक्ष को जाना

२१९. जन्तालि पालि मन नेत्त विलुम्पमानं
सम्फुल्ल सालवन राजि विराजमानं
देविन्दनन्दनवनं व भिनन्दनीय
मुय्यान मुत्तमतरं पवरो पगन्त्वा

२२० कत्वा दिवाविहारं सो सायण्हसमये तहिं
गच्छं केसरलीलाय बोधिपादपसन्तिकं

२२१. ब्रह्मा सुरासुर महोरग पक्खिराज
संसज्जितोरु वटुमे दिपदानमिन्दो
पायासि सोत्थियद्विजो तिणहारको तं
दिस्वान तस्स अददा तिणमुट्ठियो सो

२२२. इन्दीवरारविन्दादि कुसुमान म्बरा तहिं
पतन्ति वुट्ठिधारा व गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२३ चारु चन्दनचुण्णादि धूपगन्धेहि नेकधा
अनोकासो सि आकासो गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२४. रतनुज्जलछत्तेहि चारुहेमद्धजेहि च
अनोकासो सि आकासो गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२५. चेलुक्खेप सहस्सेहि कीळन्तेहि मरूहि पि
अनोकासो सि आकासो गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२६. सुरदुन्दुभि वज्जानि करोन्तेहि मरूहि पि
अनोकासो सि आकासो गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२७. सुरङ्गनाहि सङ्गीतिं गायन्तीहि पि नेकधा
अनोकासो सि आकासो गच्छन्ते दिपदुत्तमे

२२८. मनोरमा किण्णर किण्णरङ्गना
मनोरमङ्गा उरगोरगङ्गना
मनोरमे तम्हि च नच्चगीतियो
मनोरमा नेकविधा पवत्तयुं

२२९. तदा महोघे व महामहे हि
पवत्तमाने इति सो महायसा
तिणे गहेत्वा तिभवेकनायको

उपागतो बोधिदुमिन्दसन्तिकं

१५.समाधि से पूर्व घटनायें

२३०. विद्दुमा सितसेलग्ग रजताचलसन्निभं
कत्वा पदक्खिणं बोधिपादपं दिपदुत्तमो

२३१. पुरत्थिम दिसाभागे अचले रणधंसके
महीतले ठितो धीरो चालेसि तिणमुट्ठियो

२३२. चुद्दसहत्थमत्तो सो पल्लङ्को आसि तावदे
अथ तं अब्भुतं दिस्वा महापञ्ञो विचिन्तयि

२३३. मंसलोहित मट्ठि च नहारु च तचो च मे
कामं सुस्सतु नेवाहं जहामि विरियं इति

२३४. आभुजित्वा महावीरो पल्लङ्क मपराजितं
पाचीनाभिमुखो तस्मिं निसीदि दिपदुत्तमो

२३५. देवदेवस्स देविन्दो सङ्ख मादाय तावदे

वीसुन्दरसतुब्बेधं धमयन्तो तहिं ठितो

२३६. दुतियं पुण्णचन्दं व सेतच्छत्तं तियोजनं
धारयन्तो ठितो सम्मा महाब्रह्मा सहम्पति

२३७. चारुचामर मादाय सुयामो पि सुराधिपो
वीजयन्तो ठितो तत्थ मन्दं मन्दं तिगावुतं

२३८. बेलुवं वीण मादाय सुरो पञ्चसिखव्हयो
नानाविध लयोपेतं वादयन्तो तथा ठितो

२३९. थुति गीतानि गायन्तो नाटकीहि पुरक्खतो
तथेव हासि सो नागराजा कालव्हयोपि च

२४०. गहेत्वा हेममञ्जूसा सुगन्धपुप्फेहि पूरिता
पूजयन्ता व अट्ठसु बत्तिंसा पि कुमारिका

११. मार से युद्ध २४१. सइन्ददेवसङ्घेहि नेहि इत्थं महामहे
वत्तमाने तदा मारो पापिमा इति चिन्तयि

२४२. अतिक्कमितु कामो यं कुमारो विसयं मम
सिद्धत्थो अथ सिद्धत्थं करिस्सामीति नावदे

२४३. मापेत्व भिंसनतरो रुसहस्सबाहुं
संगय्ह तेहि जलिता विविधायुधानि
आरुय्ह चारुदिरदं गिरिमेखलाख्यं
चण्डं दियड्ढ सतयोजन मायतं तं

२४४. नानाननाय नलवण्ण सिरोरुहाय
रत्तोरुवट्ट वहि निग्गत लोचनाय
दट्ठोट्ठ भिंसन मुखाय रुग भुजाय
सेनाय सो परिवुतो विविधायुधाय

२४५. तत्थो पगम्म अतिभीमरवं रवन्तो
सिद्धत्थ मेथ इति गण्हथ बन्धथे मं
आणापयं सुरगणं सह दस्सनेन
चण्डानिलुग्गत पिचुंव पलापयित्थ

२४६. गम्भीर मेघरव सन्निभ चण्डनादं
वातञ्च मापिय ततो सुभगस्स तस्स
कण्णम्पि चीवरवरस्स मनोरमस्स
नो आसि येव चलितुं पभु अन्तको थ

२४७. संवट्ट वुट्ठि जवसन्निभ भीरघोर
वस्सं पवस्सिय ततो दकबिन्दुकम्पि
ना सक्खि नेतु मतुलस्स समीपकम्पि
दिस्वा तमब्भुतमथो पि सुदुम्मुखो सो

२४८. अच्चन्त भीम नळ अच्चिसमुज्जलोरु
पासान भस्म कललायुध वस्सधारा
अङ्गार पज्जलित वालुकवस्सधारा
वस्सापयित्थ सकलानि इमानि तानि

२४९. मारानुभाव बलतो नभतो पगन्त्वा
पत्वान पुञ्ञसिखरुग्गत सन्तिकं तु
मालागुळप्पभुति भावगतानि थापि
लोकन्तरे व तिमिरं तिमिरं सुघोरं

२५०. मापेत्व मोहतिमिरम्पि हतस्स तस्स
देहप्पभाहि सतरंसि सतोदितं व
जातं मनोरमतरं अतिदस्सनीय

मालोक पुञ्ज मवलोकिय पापधम्मो

२५१. कोपोपरत्त वदनो भुकुटिप्पचारा
अच्चन्त भिंसन विरूपक वेसधारि
अच्चन्त तिण्हतरधार मसङ्ग मेव
चक्कायुधं वरतरं अपि मेरुराजं

२५२. सङ्खण्डयन्तमिव थूलकलीरखण्डं
विस्सज्जि तेनपि न किञ्चि गुणाकरस्स
कातुं पभुत्त मुपगञ्छि ततो तमेतं
गन्त्वा नभा कुसुमछत्त माग सीसं

२५३. विस्सज्जितापि सेनाय सेलकूटा नलाकुला
पगन्त्वा नभसा मालागुलत्तं समुपागतो

२५४. तम्पि दिस्वा ससोको सो गन्त्वा धीरस्य सन्तिकं
"पापुणाति ममेवायं पल्लङ्को अपराजितो

२५५ इतो उट्ठह पल्लङ्का" इति भासित्थ धीमतो
कतकल्याणकम्मस्स "पल्लङ्कत्थाय मार ! ते

२५६. को सक्खी"ति पवुत्तो सो इमे सब्बे ति सक्खिनो
सेनायाभिमुखं हत्थं पसारेत्वान पापिमा

२५७. घोरनादेन हं सक्खि अहं सक्खीति तायपि
सक्खिभावं वदापेत्वा तस्सेवं समुदीरयि

२५८. को ते सिद्धत्थ ! सक्खी ति अथ तेना नुलेन पि
ममेत्थ सक्खिनो मार ! न सन्ती ति सचेतना

२५९. रत्तमेघोपनिक्खन्त हेमविज्जु व भासुरा
नीहरित्वा सुरत्तम्हा चीवरा दक्खिणं करं

२६०. भूमियाभिमुखं कत्वा "कस्मा पारमिभूमियं

उन्नादेत्वा निदाने वं निस्सद्दा सी" ति भूमिया

२६१. मुञ्चापिते रवे नेकसते मेघरवे यथा
बुद्धनागबला नागं जानूहि सुप्पतिट्ठितं

१६२. दिस्वानि दानि गण्हाति दानि गण्हाति चिन्तिय
सम्भिन्न दाठसप्पो व हतदप्पो छुदुम्मुखो

२६३. पहाय युधवत्थानि लङ्कारानि अनेकधा
चक्कवाळाचला याव ससेनाय पलायि सो

२६४. तं मारसेनं सभयं ससोकं
पालयमानं इति देवसङ्घा
दिस्वान मारस्स पराजयो यं
जयोति सिद्धत्थकुमारकस्स

२६५. सम्मोदमाना अभिपूजय ता
धीरं सुगन्धप्पभुतीहि तस्मिं
पुनागता नेकथुतीहि सम्मा
उग्घोसमाना छनवेसधारी

१७.बुद्ध बनना २६६. एवं मारबलं धीरो विद्धंसेत्वा महब्बलो
आदिच्चे धरमाने व निसिन्नो अचलासने

२६७. यामस्मिं पठमे पुब्बेनिवासं ञानमुत्तमो
विसोधेत्वान यामस्मिं मज्झिमे दिब्बलोचनं

२६८. सो पटिच्चसमुप्पादे अथ पच्छिमयामके
ओतारेत्वान ञानं सं सम्मसन्तो अनेकधा

२६९. लोकधातुसतं सम्मा उन्नादेत्वा रुणोदये
बुद्धो भुत्वान सम्बुद्धो सम्बुद्ध म्बुजलोचनो

२७०. अनेकजाति संसारा सन्धाविस्सन्ति आदिना

उदानेदं उदानेसि पीतिवेगेन सादिसो

२७१. सल्लक्खेत्वा गुणे तस्स पल्लङ्कस्स अनेकधा
न ताव उट्ठहिस्सामि इतो पल्लङ्कतो इति

२७२. समापत्ती समापज्जि अनेकसतकोटियो
सत्था तत्थेव सत्ताहं निसिन्नो अचलासने

२७३. अज्जापि नून धीरस्स सिद्धत्थस्स यसस्सिनो
अत्थि कत्तब्बकिच्चं हि तस्मा आसनमालयं

२७४. न जहासी ति एकच्च देवताना सि संसयं
ञत्वा तासं वितक्कं तं समेतुं सन्तमानसो

२७५. उट्ठाय हेमहंसो व हेमवण्णो पभङ्करो
अब्भुग्गन्त्वा नभं नाथो अकासि पाटिहारियं

२७६. वितक्कमेवं इमिना मरूनं
सम्मू पसम्मा निमिसेहि बोधिं
सम्पूजयन्तो नयनम्बुजेहि
सत्ताहमट्ठासि जयासनं च

२७७. सुभासुरस्मिं रतनेहि तस्मिं
संचङ्कमन्तो वरचङ्कमस्मिं
मनोरमस्मिं रतनालये पि
विसुद्धधम्मं विचिनं विसुद्धो

२७८. मूले जपालतरुराजवरस्स तस्स
मारङ्गनान ममलाननपङ्कजानि
सम्मा मिलापिय ततो मुचलिन्द मूले
भोगिन्द चित्तकुमुदानि पबोधयन्तो

२७९. मूलेपि राजायतनस्स तस्स

तस्मिं समापत्ति सुखम्पि विन्दं
संवीतिनामेसि मनुञ्ञवण्णो
एकूनपञ्ञास दिनानि धीमा

१८.समाधि सेउठना २८०. अनोतत्तोदकं दन्तकट्ठनागलतामयं
हरीटकागदं भुत्वा देविन्देना भतुत्तमं

२८१. वानिजेहि समानीतं समन्थमधुपिण्डकं
महाराजूपनीतम्हि पत्तम्हि पतिगण्हिय

१९.धर्मका महत्व चिन्तन २८२. भोजनस्सा वसानम्हि जपालतरुमूलकं
गन्त्वा धिगत धम्मस्स गम्भीरत्त मनुस्सरि

२८३. महीसन्धारको वारिक्खन्ध सन्निभको अयं
गम्भीरो धिगतो धम्मो मया सन्तो ति आदिना

२८४. धम्मगम्भीरतं धम्मराजस्स सरतो सतो
आसेवं तक्कणं धम्मं इमं मे पटिविज्झितुं

२८५. वायमन्तेन सम्पत्त याचकानं मनोरमं
कन्तेत्वा उत्तमङ्गं च मोलिभूसण भूसितं

२८६. सुवञ्जितानि अक्खीनि उप्पाटेत्वान लोहितं
गलतो नीहरित्वान भरियं लावण्णभासुरं

२८७. अत्रजं च ददन्तेन कुलवंसप्पदीपकं
दानं नाम न दिन्नं च नत्थि सीलं अरक्खितं

२८८. तथा हि सङ्खपालादि अत्तभावेसु जीवितं
मया परिच्चजन्तेन सीलभेदभयेन च

२८९. खन्तिवादादिके नेकअत्तभावे अपूरिता
छेज्जादि पापुनन्तेन पारमी नत्थि काचि मे

२६०. तस्स मे विधमन्तस्स मारसेनं वसुन्धरा
न कम्पित्थ अयं वुब्बे निवासं सरतो पि च

२६१. विसोधेन्तस्स मे यामे मज्झिमे दिब्बलोचनं
न कम्पित्थ पकम्पित्थ पच्छिमे पन यामके

२६२. पच्चयाकारञानं मे तावदे पटिविज्झतो
साधुकारं ददन्ती व मुञ्चमाना महारवं

२०. प्रचारसे निराशाता
२६३. सम्बुएणला्पू विय कञ्जिकाहि
तक्कं हि पुरणं विय चाटिका व
सम्मक्खितो व जनकेहि हत्थो
वसाहि सम्पीत पिलोतिका व

२६४. किलेस पुञ्जभरितो किलिट्ठो
रागेन रत्तो अपि दोसदुट्ठो
मोहेन मूळ्हो ति महब्बलेन
लोको अविज्जा निकराकरो यं

२६५. किन्नाम धम्मं पटिविज्झते तं
अत्था हि को तम्हि ति देसनाय
एवं निरुस्साह मगञ्छि नाथो
पजाय धम्मामत पानदाने

२१. आदि प्रचार
२६६. निच्छारेत्वा महानादं ततो ब्रम्हा सहम्पति
नस्सति वत भो लोको, इति लोको विनस्सति

२६७. ब्रह्मसङ्घं समादाय देवसङ्घं च तावदे
लोकधातुसते सत्थु समीपं समुपागतो

२६८. गन्त्वा महीतले जानुं निहच्च सिरसञ्जलिं
पग्गव्ह भगवा धम्मं देसेतु इति आदिना

२९९. याचितो तेन सम्बुद्धारविन्दप्पदनो जिनो
लोकधातुसतं बुद्धचक्खुना लोकयं तदा
३००. तस्मिं अप्परजक्खा दि मज्झा दिस्वा ति एत्तका
विभजित्वा थ ते सत्ते भब्बा भब्बत्तसेन सो
३०१. अभब्बे परिवज्जेत्वा भब्बे वादाय बुद्धिया
उपनेतु जनो दानि सद्धाभाजन मत्तनो
३०२. पूरेस्सामी ति तं तस्स सद्धम्मामत दानतो
विस्सज्जि ब्रह्मसङ्घस्स वचनामत रंसियो
२२. मृग-३०३. ततो जपालोदयपब्बतोदितो
दाय जाना महप्पभो बुद्धदिवाकरो नभे
मणिप्पभासन्निभभासुरप्पभो
पमोचयं भासुरबुद्धरंसियो
३०४. पमोदयन्तो उपकादयो तदा
कमेन अट्ठारसयोजनञ्जसं
अतिक्कमित्वान सुफुल्ल पादपे
विजम्भमानालिगणाभिकूजितं
३०५. निरन्तरं नेक दिजूपकूजितं
सुफुल्लपङ्केरुह गन्धवासितं
गतो यसस्सी मिगदाय मुत्तमं
तहिं तपस्सी अथ पञ्चवग्गिया
३०६. देवातिदेवं तिभवेकनाथं
लोकन्तदस्सिं सुगतं सुगत्तं
दिस्वान धीरं मुनिसीहराजं
कुमन्तणं ते इति मन्तयिंसु

३०७. भुञ्जान ओळारिक अन्नपानं
सुवण्णवण्णो परिपुण्णकायो
एता वुसो य समणो इमस्स
करोम ना म्हे अभिवादनादिं

३०८. अयं विसालन्वयतो पसूतो
सम्भावनीयो भुवि केतुभूतो
पठिग्गहेतुं रहतासनं तु
तस्मा सनं येवि ति पञ्ञपेम

३०९. ञत्वा थ भगवा तेस वितक्कं तिक्खबुद्धिया
मेत्तानिलकदम्बेहि मानकेतुं पधंसयी

३१० समत्था नहि सण्ठातुं सकाय कतिकाय ते
अकंसु लोकनाथस्स वन्दनादीनि धीमतो

३११. बुद्धभावं अजानन्ता मुनयो मुनिराजिनो
आवुसो वादतो तस्स केवलं समुदीरयुं

३१२. अथ लोकविदू लोकनाथो तेसमुदीरथ
आवुसो वादतो नेव सत्थुनो समुदीरयी

३१३. भिक्खवे! अरहं सम्मासम्बुद्धो ति तथागतो
बुद्धभावं पकासेत्वा अत्तनो तेस मुत्तमो

३१४. निसिन्नो तेहि पञ्ञत्ते दस्सनेय्युत्तमासने
ब्रह्मनादेन ते थेरे सीलभूसन भूसिते

३१५. आमन्तेत्वान ब्रह्मानं नेककोटि पुरक्खतो
धम्मचक्कं पवत्तेन्तो देसनारंसिना तदा

३१६. मोहन्धकार रासिम्पि हन्त्वा लोके मनोरमं
धम्मालोकं पदस्सेत्वा वेनेय्यम्बुजबुद्धिया

३१७. मिगकानन संक्खाते रणभूमितले इति
राजा महानुभावो व धम्मराजा विसारदो
३१८. देसनासिं समादाय धीभुजेन मनोरमं
वेनेय्य जनबन्धूनं महानत्थकरं सदा
३१९. किलेसारी पदालेत्वा सद्धम्म जयदुन्दुभिं
पहरित्वान सद्धम्म जयकेतुं सुदुज्जयं
३२०. उस्सापेत्वान सद्धम्म जयत्थूनुत्तमं सुभं
पतिट्ठापिय लोकेकराजा हुत्वा सिवङ्करो
३२१. पमोचेत्वान जनतं ब्रहा संसारबन्धना
निब्बाण नगरं नेतुकामो लोकहिते रतो
२३.उरुवेल जाना ३२२. सुवण्णाचलकूटं व जङ्गमं चारुदस्सनं
पत्तो रुवेलगामिं तं अङ्कुसं व सुरङ्कुसं
३२३. भद्दवग्गियभूपाल कुमारे तिंस मत्तके
मग्गत्तयामतरसं पायेत्वा रस मुत्तमं
३२४. पब्बज्ज मुत्तमं दत्वा लोकत्थसत्थाय भिक्खवो
उय्योजेत्वान सम्बुद्धो चारिकं चरथा ति ते
३२५. गन्त्वोरुवेलं जटिलान मन्तो-
जटा च छेत्वान जटा बहिद्धा
पापेत्व अग्गङ्कुस मुत्तमो ते
पुरक्खतो इन्दु व तारकाहि
३२६. पुरक्खतो तेहि अनासवेहि
छब्बण्णरंसाभरणुत्तमेहि
दिसङ्गनायो अतिसोभयन्तो
पक्खोन मक्खीनि पि पीनयन्तो
२४.लट्ठि-वन जाना ३२७. दिब्बं पटिञ्ञं समनुस्सरन्तो
तं बिम्बिसारस्स महायसस्स

मोचेतुकामो वरराजवंसं
धजूपमानस्स गुणालयस्स
३२८. सिखण्डि मण्डलारद्ध नच्चं लद्धिवनव्हयं
उय्यान मगमा नेकतरु सङ्गाभिमण्डितं
२५. राज ३२९. बिम्बिसार नरिन्दो सो गतभावं महेसिनो
गृह जाना सुणित्वा पीतिपामोज्ज भूसनेन विभूसितो
३३०. त मुय्यानूपगन्त्वान महामच्च पुरक्खतो
सत्थु पादारविन्देहि सोभयन्तो सिरोरुहे
३३१. निसिन्नो बिम्बिसारं तं सद्धम्मअमतम्बुना
देविन्दगीयमानग्गवण्णो वण्णाभिराजितो
३३२. देव दानव भोगिन्द पूजितो सो महायसो
रम्मं राजगहं गन्त्वा देविन्द पुरसन्निभं
३३३. नरिन्दगेहं आनीतो नरिन्देन नरासभो
भोजनस्सा वसानम्हि चालयन्तो महामहिं
३३४. पतिगण्हिय सम्फुल्लतरुराजविराजितं
रम्मं वेळुवनारामं विलोचन रसायनं
३३५. सित पुलिन समूहच्छन्नभालङ्कतस्मिं
सुरभि कुसुम गन्धाकिण्ण मन्दानिलस्मिं
विविध कमलमाला लङ्कतम्बासयस्मिं
विपुल विमलतस्मिं वल्लिया मण्डपस्मिं
३३६. सुरनरमहनीयो चारुपादारविन्दो
विमल कमल नेत्तो कुन्ददन्ताभिरामो
गुणरतनसमुहो नाथनाथो मुनिन्दो
कणक किरणसोभो सोम सोम्माननो सो
३३७. विमल पवर सीलक्खन्धवारंच कत्वा

रुचिरवर समाधि कुन्त मुस्सापयित्वा
तिखिणतर सुभग्गं बुद्धभानोरुकण्डं
विहरति भमयन्तो काम मग्गाविहारा

२६ कपि-३३८. तदा सुद्धोदनो राजा पुत्तो सम्बोधि मुत्तमं
ल्वस्तु जाना पत्वा पवत्तसद्धम्मचक्को लोकहिताय मे

३३९. राजगहं व निस्साय रम्मे वेलुवने धुना
वसतीति सुणित्वान बुद्धभूतं सकत्रज

३४०. दट्ठ कामो नवक्खत्तुं नवामच्चे महेसिनो
नवयोध सहस्सेहि सद्धिं पेसेसि सन्तिकं

३४१. गन्त्वा ते धम्मराजस्स सुत्वा नोपमदेसनं
उत्तामत्थं लभित्वान सासनम्पि न पेसयुं

३४२. तेस्वे कम्पि अपस्सन्तो कालुदायिं सुभारतिं
आमन्तेत्वा महामच्चं पब्बज्जाभिरतं सदा

३४३. सुतग्गरतनं नेत्वा ममनेत्तारसायनं
येन केनचुपायेन करोहीति तमब्रवी

३४४. अथ योधसहस्सेन तम्पि पेसेसि सोपि च
गन्त्वा सपरिसो सत्थु सुत्वा सुन्दर देसनं

३४५. अरहत्तञ्जसं पत्वा पब्बजित्वा नरासभं
नमस्सन्तो स सम्बुद्धं पग्गय्ह सिरसञ्जलिं

३४६. वसन्तकालज्जनिता तिरत्त
वण्णाभिरामङ्कुर पल्लवानि
सनीलवण्णुज्जल पत्त युत्ता
साखासहस्सानि मनोरमानि

३४७. विसिट्ठ गंधाकुल फालिफुल्ल

नानाविचित्तानि महीरुहानि
सुचित्रा नानामिगपक्खिसङ्घ
सङ्गीयमानुत्तम काननानि

३४८. सुनीलसातोदकपूरितानि
सुनादि कादम्ब कदम्बकानि
सुगंध इन्दीवर कल्लहारा-
रविन्द रत्तम्बुज भूसितानि

३४९. तीरन्तरे जातदुमेसु पुप्फ-
किञ्जक्खरार्जीहि विराजितानि
मुत्ताति सेतामल सेकतानि
रम्मानि नेकानि जलासयानि

३५०. मनुञ्ञ वेळूरिय कञ्चुकानि
वगुण्ठितानी व सुसद्दलेहि
सुनीलभूतानि महीतलानि
नभानि मन्दानिल सङ्कुलानि

३५१. अनन्तभोगेहि जनेहि फीतं
सुराजधानिं कपिलाभिधानिं
गन्तुं भदन्ते समयो ति आदिं
संवण्णि वण्णं गमनञ्ञसस्स

३५२. सुवण्णनं तं सुगतो सुणित्वा
वण्णेसि वण्णं गमनस्सुदायि !
किन्नूति भासित्थ ततो उदायि
कथेसि दं तस्स सिवङ्करस्स

३५३. भन्ते पिता दस्सनमिच्छते ते

सुद्धोदनो राजवरो यसस्सी
तथागतो लोकहितेकनाथो
करोतु सञ्ञातक सङ्गह न्ति

३५४. सुणित्वा मधुरं तस्स गिरं लोकहिते रतो
साधु दायि! करिस्सामि ञातकानन्ति सङ्गहं

३५५. जङ्गमो हेममेरू व रत्त कम्बललङ्कतो
विमलो पुण्णचन्दो व तारकापरिवारितो

३५६. सद्धिं वीससहस्सेहि स-तचित्तेहि तादिहिं
गच्छन्तो सिरिसम्पन्नो अञ्ञसे सट्ठियोजने

३५७. दिने दिने वसित्वान योजने योजने जिनो
द्वीहि मासेहि सम्पत्तो बुद्धो जातपुरं वरं

३५८. बुद्धं विसुद्ध कमलानन सोभमानं
बालंसुमालिसत भानुसमान भानुं
चक्कङ्कितोरुचरणं चरणाधिवासं
लोकत्तयेकसरणं अरणग्गकायं

३५९. सम्पुण्ण हेम घटतोरण धूमगन्ध-
मालेहि वेणुपणवादिहि दुन्दुभीहि
चित्तेहि छत्तधज चामरवीजनीहि
सुद्धोदनादि वनिपा अभिपूजयिंसु

३६०. सुसज्जितं पुरं पत्वा मुनिन्दो तं मनोरमं
सुगन्धिपुप्फ किञ्जक्खा लङ्कतोरुतलाकुलं

३६१. सुफुल्ल जलजा किण्ण अच्छोदकजलालयं
मयूरमण्डलारद्ध रङ्गेहि च विराजितं

३६२. चारुचङ्कमपासाद लतामण्डपमण्डितं

पावेक्खि पवरो रम्मं निग्रोधारामं मुत्तमं
३६३. अन्हाकमेस सिद्धत्थो पुत्तो नत्तोति आदिना
चिन्तयित्वान सञ्जात मानसत्थद्धसाकिया
३६४. दहरे दहरे राज कुमारे इदमब्रवुं
तुम्हे वन्दथ सिद्धत्थं न वन्दाम मयन्ति तं
३६५. इदं वत्वा निसीदिंसु कत्वा ते पुरतो ततो
अदन्तदमको दन्तो तिलोकेकविलोचनो
३६६. तेसं अज्झासयं ञत्वा न मं वन्दन्ति ञातयो
हन्द वन्दापयिस्सामि दानि नेसन्ति तावदे
३६७. अभिञ्ञापादकज्झानं समापज्जित्व झानतो
वुट्ठाय हेमहंसो व हेमवण्णो पभङ्करो
३६८. अब्भुग्गन्त्वा नभं सब्बसत्तनेत्तरसायनं
गण्डम्बरुक्खमूलस्मिं पाटिहारियसन्निभं
३६९. असाधारण मञ्ञेसं पाटिहारिय मुत्तमं
रमनीयतरे तस्मिं अकासि मुनिपुङ्गवो
३७०. दिस्वा तमब्भुतं राजा सुद्धोदन नरासभो
सञ्जातपीतिपामोज्जो सक्यवंसेकनायको
३७१ सत्थु पादारविन्देहि सक्के चारुसिरोरुहे
भूसिते कासि ते सब्बे साकिया अकरुं तदा
३७२. धीरो पोक्खरवस्सस्स अवसाने मनोरमं
धम्मवस्सं पवस्सेत्वा सत्तचित्तावनुग्गतं
३७३. महामोहरजं हन्त्वा ससङ्घो दुतिये दिने
पावेक्खि सपदानेन पिण्डाय पुर मुत्तमं
३७४. तस्स पादारविन्दानि रावन्दानि अनेकधा
उग्गन्त्वा पविगण्हिंसु अक्कन्तक्कन्तठानतो

३७५. *देहजोतिकदम्बेहि गोपुरट्टालमन्दिरा*
पिञ्जरत्तं गतो तस्मिं पाकारप्पभुती तदा

३७६. चरन्तं पविसित्वान पिण्डाय पुरवीथियं
लोकालोककरं वीरं सन्तं दन्तं पभङ्करं

३७७. पसादजनके रम्मे पासादे सा यसोधरा
सीहपञ्जरतो दिस्वा ठिता पेमपरायणा

३७८. भूसने मणिरंसीहि भासुरं राहुलं वरं
आमन्तेत्वा पदस्सेसा तुय्ह मेसो पिता ति तं

३७९. निकेत मुपसङ्कम्म सुद्धोदनयसस्सिनो
वन्दित्वा तम नेकाहि इत्थीहि परिवारिता

३८०. देव ! देविन्दलीलाय पत्तो ते ध पुरे पुरे
चरित्वा चरते दानि पिण्डाया ति घरे घरे

३८१. पवेदेसि पवेदेत्वा गमा मन्दिर मत्तनो
आनन्दजलसन्दोह पूरितोरुविलोचना

३८२. ततो सेसनरिन्दानं इन्दो इन्दो व लङ्कतो
कम्पमानो पगन्त्वा न वेगेन जिनसन्तिकं

३८३. सक्यपुङ्गव ! ते ने स वंसो माचर माचर
वंसे पुत्तेकराजापि न पिण्डाय चरी पुरे

३८४. इति वुत्ते नरिन्देन मुनिन्दो गुणसेखरो
तुय्ह मेसो महाराज वंसो मय्हं पन न्वयो

३८५, बुद्धवंसो ति सम्बुद्धवंसं तस्स पकासयि
अथो तस्मिं ठितो येव देसेन्तो धम्म मुत्तरिं

३८६. उत्तिट्ठ न प्पमज्जेय्य धम्मं मिच्चादि मुत्तमं
गाथं मनोरमं वत्वा सोतूनं सिवमावहं

३८७. दस्सनग्गरसं दत्वा सन्तप्पेत्वा तमु शमो
तेना भियाचितो तस्स निकेतं समुपागतो

३८८. सद्धिं वीससहस्सेहि तादिहि दिपदुत्तमं
मधुरोदनपानेन सन्तप्पेत्वा महीपति

३८९. चूळामणिमरीचीहि पिञ्जरञ्जलिकेहि तं
राजूभि सह वन्दित्वा निसीदि जिनसन्तिके

३९०. तापि नेकसता गन्त्वा सुन्दरा राजसुन्दरी
नरिन्देन अनुञ्ञाता निसीदिंसु तहिं तदा

३९१. देसेत्वा मधुरं धम्मं तिलोकतिलको जिनो
अह म्पज्ज न गच्छेय्यं सचे बिम्बाय मन्दिरं

३९२. दयाय हदयं तस्सा फालेय्या ति दयालयो
सावकग्गयुगं गय्ह मन्दिरं पितरा गतो

३९३. निसीदि पविसित्वान बुद्धो बुद्धासने तहिं
छब्बण्णरंसिजालेहि भासुरन्तो व भानुमा

३९४. मनोसिला चुण्णसमान देह
मरीचिजालेहि विराजमाना
पकम्पिता हेमलता व बिम्बा
बिम्बाधरा सत्थु समीप माग

३९५. सत्थु पादेसु सम्फस्स सीतलुत्तमवारिना
निब्बापेसि महासोकपावकं हदयिन्धने

३९६. राजा सत्थु पवेदेसि बिम्बाया ति बहुं गुणं
मुनिन्दो पि पकासेसि चन्दकिण्णर जातकं

३९७. तदा नन्दकुमारस्स सम्पत्ते मङ्गलत्तये
विवाहा अभिसेको च इति गेहप्पवेसनं

३९८. मङ्गलानं पुरे येव पब्बाजेसि पभङ्करो
अनिच्छन्तं व नेत्वा तं आरामं रम्म मुत्तमं

३९९. अथान मनुगच्छन्तं दायज्जत्थं सकत्रजं
कुमारं राहुलं चापि कुमाराभरणुज्जलं

४००. सुखा व छाया ते मे ति उग्गिरन्तं गिरं पियं
दायज्जं मे ददाही ति दायज्जं मे ददाहि च

४०१. आराम मेव नेत्वान पब्बाजेसि निरुत्तरं
सद्धम्मरतनं दत्वा दायज्जं तस्स धीमतो

२७. राज-४०२. निक्खम्म तम्हा सुगतंसुमाली
गृह जाना तहिं तहिं जन्तु सरोरुहानि
सद्धम्मरंसीहि विकासयन्तो
उपागता राजगहं पुना पि

४०३. कुसुमाकुल सुन्दरतरु पवने
पदुमुज्जल भासुर सरनिकरे
पुथुचङ्कममण्डित सित सिकते
सुभसीतवने विहरति सुगतो

४०४. तदा सुदत्त व्हय सेट्ठि सेट्ठो
बहूहि भण्डं सकटेहि गय्ह
सावत्थितो राजगहे मनुञ्ञे
सहाय सेट्ठिस्स घरू पगन्त्वा

४०५. तेनेव वुत्तो सुभगेन बुद्धो
जातो ति लोके दिपदानमिन्दो
सञ्जातपीतीहि उदग्गचित्तो
रत्तिं पभातं इति मञ्ञमाना

४०६. निक्खम्म तम्हा विगतन्धकारे
देवानुभावेन महापथम्हि
गन्त्वान तं सीतवनं सुरम्मं
सम्पुण्णाच दं व विराजमनं
४०७. तं दीपरुक्खं विय पज्जलन्तं
तिलोचनानन्दकरं महेसिं
दिस्वान तस्सु त्तमपादरागं
पटिग्गहेत्वा सिरसा सुधीमा
४०८. गम्भीरं निपुणं धम्मं सुणित्वा विमलं वरं
सोतापत्ति फलम्पत्वा सहस्सनयमण्डितं
४०९. निमन्तेत्वान सम्बुद्धं ससङ्घं लोकनायकं
वण्णगन्धरसूपेतं दत्वा दानं सुखावहं
२८.श्रावस्ति जाना ४१०. सत्थु आगमनत्थाय सावत्थिनगरं वरं
पटिञ्ञं सो गहेत्वान गच्छन्तो अन्तरापथे
४११. योजने योजने चारू चित्तकम्मसमुज्जले
विहारे पवरे दत्वा कारापेत्वा बहुं धनं
४१२. सावत्थिं पुनरागन्त्वा पासादसत मण्डितं
तोरणग्घिक पाकार गोपुरादि विराजितं
४१३. पुरं अपहसन्तं व देविन्दस्सापि सब्बदा
सब्बसम्पत्तिसम्पन्नं नच्च गीतादिसोभितं
४१४. कस्मिं सो विहरेय्या ति भगवा लोकनायको
समन्ता नुविलोकेन्तो विहारारहभूमिकं
४१५. जेत राजकुमारस्स उय्यानं नन्दनोपमं
छायुदकादिसम्पन्नं भूमिभागं उदिक्खिय

४१६. हिरञ्ञकोटिसन्थारवसेने व महायसो
किणित्वा पवरे तम्हि नरामरमनोहरे

४१७. निच्चं किङ्किणीजालनादरुचिरं सिङ्गी व सिङ्गाकुलं
रम्मं नेकमणीहि छन्नछदनं आमुत्तमुत्तावलिं
नानारागवितानभासुरतरं पुप्फादिना लङ्कतं
चित्रं गन्धकुटिं वरं सुविपुलं कारेसि भूसेखरं

४१८. जिनत्रजान म्पि विसाल मालयं
वितान नाना सयनासनुज्जलं
सुमण्डितं मण्डपचङ्कमादिना
विलुम्पमानं मनलोचनं सदा

४१९. अथापि सण्हामलसेतवालुकं
सवेदिकाचारु विसालमालकं
जलासयं सातिसीतलोदक
सुगन्धिसोगन्धिक पङ्कजाकुलं

४२०. सुफुल्ल सालासन सोकनाग
पुन्नाग पूगादि विराजमानं
मनोरमं जेतवनाभिधानं
कारापयि सेट्ठि विहारसेट्ठं

४२१. विसाल केलास धराधरुत्तमा—
भिरामपाकार फनिन्द गोपितो
जनस्स सब्बाभिमतत्थ साधको
विहार चिन्तामणि सो विराजते

४२२. ततो आगमनत्थाय मुनिन्दं नाथपिण्डिको
दूतं पाहेसि सो सत्था सुत्वा दूतस्स सासनं

४२३. महता भिक्खुसङ्घेन तदा तम्हा पुरक्खतो
निक्खमित्वा नुपुब्बेन पत्तो सावत्थि मुत्तमं
४२४. समुज्जलानि नेकानि धजाना दाय सुन्दरा
कुमारा पुरतो सत्थु निक्खमिंसु सुरा यथा
४२५. निक्खमिंसु ततो तेसं पच्छतो तरुणङ्गना
चारुपुण्णघटा दाय देवकञ्ञा यथा तथा
४२६. पुण्णपातिं गहेत्वान सेट्ठिनो भरिया तथा
सद्धिं नेकसतित्थीहि नेकालङ्कार लङ्कता
४२७. महासेट्ठि महासेट्ठिसतेहि सह नायकं
अब्भुग्गञ्छि महावीरं पूजितो तेहि नेकधा
४२८. छब्बण्णरंसीहि मनोरमेहि
पुरं वरं पिञ्जरवण्णभावं
नेन्तो मुनिन्दो सुगतो सुगत्तो
उपाविसी जेतवनं विहारं
४२९. चातुद्दिसस्स सङ्घस्स सम्बुद्ध प्पमुखस्स हं
इमं दम्मि विहारं न्ति सत्थु चारुकरम्बुजे
४३०. गन्धवासितं वारिं हेमभिङ्कारतो वरं
आकिरित्वा अदा रम्मं विहारं चारुदस्सनं
४३१. सुरम्मं विहारं पटिग्गय्ह सेट्ठं
अनग्घे विचित्तासनस्मिं निसिन्नो
जितिन्दानमिन्दो तिलोकेकनेत्तो
तिलोकप्पसादावहं तं मनुञ्ञं
४३२. उदारा निसंसं विहार प्पदाने
अनाथप्पदानेन नाथस्स तस्स

सुदत्ताभिधानस्स सेट्ठिस्स सत्था
यसस्सी हितेसी महेसी अदेसी
४३३. उदारा निससं विहारप्पदाने
कथेतुं समत्थो विना भूरिपञ्ञं
तिलोकेकनाथं नरो कोसि युत्तो
मुखानं सहस्सेहि नेकेहि चापि
४३४. इति विपुलयसो सो तस्स धम्मं कथेत्वा
अपि सकलजनानं मानसे तोसयन्तो
परम मधुरनादं धम्मभेरिं महन्तं
विहरति पहरन्तो तत्थ तत्थूपगन्त्वा
२६.बुद्ध ४३५. एवं तिलोकहितदेन महादयेन
का निवास लोकुत्तमेन परिभुत्तपदेसपन्तिं
निच्चं सुरासुर महोरग रक्खसादि-
सम्पूजितं अह मिदानि निदस्सयिस्सं
४३६. सद्धम्म रंसि निकरेहि जिनंसुमाली
वेनेय्यपङ्कजवनानि विकासयन्तो
वासं अकासि पवरो पठमम्हि वस्से
बाराणसिम्हि नगरे मिगकाननम्हि
४३७. नानप्पकार रतनापण पन्ति वीथि-
रम्मे पुरे पवर राजगहाभिधाने
वासं अकासि दुतिये ततिये चतुत्थे
वस्से पि कन्ततर वेलुवने व नाथो
४३८. भूपाल मोलि मणि रंसि विराजमानं
वेसालिनामविदितं नगरं सुरम्मं

निस्साय सक्यमुनि केसरि पञ्चमम्हि
वस्सम्हि वास मकरित्थ महावनस्मिं

४३९. फुल्लातिनील विमलुप्पल चारुनेत्तो
सिङ्गीसमान तनु जोतिहि जोतमानो
बुद्धो अनन्तगुणसन्निधि छट्ठवस्से
वासं अका विपुलमङ्कुलपब्बतस्मिं

४४०. गम्भीर दुद्दसतरं मधुरं मरूनं
देसेत्व धम्म मतुलो सिरिसन्निवासो
देविन्दसीतल विसाल सिलासनस्मिं
वस्सम्हि वास मकरि मुनि सत्तमम्हि

४४१. फुल्लारविन्दचरणो चरणाधिवासो
सो सुंसुमारगिरिनाम धराधरम्हि
वासं अका परममारजि अट्ठमस्मिं
वस्सम्हि कन्ततरभेसकलावनम्हि

४४२. नानामतातिबहुतित्थिय सप्पदप्पं
हन्त्वा तिलोकतिलको नवमम्हि वस्से
वासं अकासि रुचिरे अतिदस्सनीये
कोसम्बि सिम्बलिवने जिनपक्खिराजा

४४३. तेसं महन्तकलहं समितुं यतीनं
निस्साय वारणवरं दसमम्हि वस्से
पुप्फाभिकिण्ण विपुलामलकाननस्मिं
वासं अका मुनिवरो वरपारलेय्ये

४४४. धम्मामतेन जनतं अजरामरत्तं
नेन्तो विलोचन मनोहर सुद्धदन्तो
नालाभिधान दिजगामवरे मुनिन्दो
वासं अका अमितबुद्धि दसेक वस्से

४४५. वेरञ्ज चारु दिजगाम समीपभूते
आरामके सुरभिपुप्फफलाभिरामे
सब्बञ्ञू सक्यमुनि वारसमम्हि वस्से
वासं अकासि पुचिमन्द दुमिन्द मूले

४४६. फुल्लारविन्दवदनो रविचारुसोभो
लोकस्स अत्थचरियाय दयाधिवासो
वासं अका रुचिर चालिय पब्बतस्मिं
वीरो तिलोकगरु तेरसमम्हि वस्से

४४७. बन्धूक पुप्फसम पादकरा भिरामो
धम्मिस्सरो पवरजेतवने सुरम्मे
धीरो महिद्धि मुनि चुद्दसमम्हि वस्से
वासं अका सकलसत्तहितेसु युत्तो

४४८. वेनेय्यबन्धुवन रागगजे विहन्त्वा
वस्सम्हि पञ्चदसमे मुनिसीहराजा
वासं अका कपिलवत्थु धराधरोरु-
निग्रोधराम रमणीय मणिग्गुहायं

४४९. यक्खम्पि कक्खलतरं सुविनीतभावं
नेत्वा पुरे वरतमाल्लवका भिधाने
वस्सम्हि वास मकरि दसछट्ठमम्हि

नेन्तो जनं बहुतरम्पि च सन्तिमग्गं

४५०. पाकार गोपुर निकेतन तोरणादि
नेत्ताभिराम वर राजगहे महेसि
वासं अका नधिवरो दससत्तमम्हि
वस्सम्हि पत्थटयसो भुवनत्तयस्मिं

४५१. धम्मोसधेन मधुरेन सुखावहेन
लोकस्स घोरतर रागरजं विहन्त्वा
वस्सम्हि वास मकरि दसअट्ठमस्मिं
अङ्गीरसो पवरचालियपब्बतस्मिं

४५२. वेनेय्य बन्धुजन मोहरिपुं उळारं
हन्त्वान धम्मअसिना वरधम्मराजा
एकूनवीसतिमके पुन तत्थ वस्से
वासं अका मधुरभारति लोकनाथो

४५३. सुद्धासयो पवरराजगहे विचित्ते
वासं अकासि समवीसतिमम्हि वस्से
लोकस्स अत्थचरणे सुभकप्परुक्खो
चिन्तामणि प्पवरभद्दघटो मुनिन्दो

४५४. एवं तिलोकमहितो अनिबद्धवासं
कत्वा चरम्पठमबोधियु दारपञ्ञो
छब्बण्णरंसिसमुपेतविचित्तदेहो
लोकेकबन्धु भगवा अवसेसकाले

४५५. सावत्थियं पवरजेतवने च रम्मे
दिब्बालये व समलङ्कत पुब्बरामे
वासं अकासि मुनि वीसतिपञ्चवस्से

लोकाभिवुद्धिनिरतो सुखसन्निवासो

४५६. इति अमितदयो सो पञ्चतालीसवस्से
मनुजमनवनस्मिं जातरागग्गिरासिं
परममधुरधम्मम्बूहि निब्बापयन्तो
अवसि स मुनिमेघो लोकसन्तिं करोतु

३० कवि ४५७. के अन्तिम वचन पञ्ञा वरङ्गना मय्हं सञ्जाता मनमन्दिरे
तोसयन्ती सब्बजनं वुड्ढिं गच्छतु सब्बदा

४५८. चित्तं यं रचयन्तेन जिनस्स चरितं मया
पुञ्ञं तस्सानुभावेन सम्पत्तो तुसितालयं

४५९. मेत्तेय्य लोकनाथस्स सुणन्तो धम्मदेसनं
तेन सद्धिं चिरं कालं विन्दन्तो महतिं सिरिं

४६०. बुद्धे जाते महासत्ते रम्मे केतुमतीपुरे
राजवंसे जनित्वान तिहेतूपटिसंधिको

४६१. चीवरं पिण्डपातं च अनग्घं विपुलं वरं
सेनासनं च भेसज्जं दत्वा तस्स महेसिनो

४६२. सासने पब्बजित्वान जोतन्तो तमनुत्तरं
इद्धिमा सतिमा सम्मा धारेन्तो पिटकत्तयं

४६३. व्याकतो तेन बुद्धो यं हेस्सती ति अनागते
उप्पन्नुप्पन्न बुद्धानं दानं दत्वा सुखावहं

४६४. संसारे संसरन्तो हि कप्परुक्खो व पाणिनं
इच्छितिच्छित मन्नादिं ददन्तो मधुरं वरं

४६५. मंसलोहितनेत्तादिं ददं चित्तसमाहितो
सीलनेक्खमपञ्ञादिं पूरेन्तो सब्बपारमी

४६६. पारमीसिखरं पत्वा बुद्धो सुद्धो अनुत्तरो
देसेत्वा मधुरं धम्मं जन्तूनं सिवमावहं

४६७. सब्बं सदेवकं लोकं ब्रह्मा संसारबन्धना
मोचयित्वा वरं खेमं पापुणेय्यं सिवं पुरं

४६८. लङ्कालङ्कारभूतेन भूपालन्वयकेतुना
विजयाबहुना रञ्ञा सकनामेन कारिते

४६९. सतोयासयपाकारगोपुरादिविराजिते
परिवेणवरे रम्मं वसता सन्तवुत्तिना

४७०. मेधङ्कराभिधानेन दयावासेन धीमता
थेरेन रचितं एतं सब्भि संसेवितं सदा

४७१. भवे भवे च गाथानं तेसत्ततिचतुस्सतं
गन्थतो पञ्चपञ्ञासाधिकं पञ्चसतं इति

-:०:-

१०५ के आगे किसी २ पुस्तक में यह श्लोक भी पाया जाता है।

सवेणुवीणा सुरदुन्दुभी नभे सकं सकं चारुसरं पमोचयुं
सपब्बतिन्दा पथुलोकधातुया उदारओभासचयो मनोरमो

बुद्ध की दिनचर्या

(अङ्गुत्तरनिकायट्ठकथा से उद्धृत)

१ निपात ६ वर्ग

पञ्च हि बुद्धकिच्चानि-:पुरेभत्त किच्चं, पच्छाभतकिच्चं, पुरिमयाम किच्चं, मज्झिमयाम किच्चन्ति

१. तत्रिदं पुरेभत्तकिच्चं—

भगवा हि पातो व उट्ठाय उपट्ठाका नुग्गहत्थं सरीरफासुकत्थञ्च मुखधोवनादि सरीरपरिकम्मं कत्वा याव भिक्खाचारवेला ताव विवित्तासने वीतिनामेत्वा भिक्खाचारवेलायं निवासेत्वा, कायबन्धनं बन्धित्वा, चीवरं पारुपित्वा, पत्त मादाय कदाचि भिक्खुसङ्घपरिवुतो गामं वा निगमं वा पिण्डाय पविसति, कदाचि पकतिया, कदाचि अनेकेहि पाटिहारियेहि वत्तमानेहि। सेय्यथीदं पिण्डाय पविसतो लोकनाथस्स पुरतो पुरतो गन्त्वा मुदुगतयो वाता पठवीं सोधेन्ति, वलाहका मुदुफुसितानि मुञ्चन्तो मग्गे रेणुं वूपसमेत्वा उपरि वितानं हुत्वा तिट्ठन्ति, अपरे वाता पुप्फानि उपाहरित्वा मग्गे ओकिरन्ति। उण्णता भूमिप्पदेसा ओणमन्ति, ओणता उन्नमन्ति, पादनिक्खेप समये समा भूमि होति, सुखसम्फस्सानि पदुमपुप्फानि वा पादे सम्पटिच्छन्ति, इन्दखीलस्स अन्तो ठपितमत्ते दक्खिणपादे सरीरा छब्बण्णरसियो निक्खमित्वा सुवण्णरसपिञ्जरानि विय, चित्रपट्टपरिक्खित्तानि विय च पासादकूटागारादीनि करोन्तियो इतोचितो च विधावन्ति। हत्थी अस्स विहगादयो सकसकट्ठानेसु ठिता येव मधुरेनाकारेन सद्दं करोन्ति, तथा भेरी वीणादीनि तुरियानि मनुस्सानञ्च कायूपगानि आभरणानि। तेन सञ्ञानेन मनुस्सा जानन्ति अज्ज भगवा इध पिण्डाय पविट्ठो ति। ते सुनिवत्था सुपारुता गन्धपुप्फादीनि आदाय घरा निक्खमित्वा अन्तरवीथि पटिपज्जित्वा भगवन्तं गन्धपुप्फादीहि सक्कच्चं पूजेत्वा वन्दित्वा अम्हाकं भन्ते दस भिक्खू, अम्हाकं वीसति, अम्हाकं भिक्खुसतं देथा ति याचित्वा भगवतो पि पत्तं गहेत्वा

आसनं पञ्ञापेत्वा सक्कच्चं पिण्डपातेन पतिमानेन्ति। भगवा कतभत्त-किच्चो तेसं सन्तानानि ओलोकेत्वा तथा धम्मं देसेति यथा केचि सरणगमने पतिट्ठहन्ति, केचि पञ्चसु सीलेसु, केचि सोतापत्ति सकदागामि अनागामि फलानं अञ्ञतरस्मिं, केचि पब्बजित्वा अग्गफले अरहत्ते ति। एवं महाजनं अनुग्गहेत्वा उट्ठाया सना विहारं गच्छति। तत्थ गन्धमण्डलमाले पञ्ञत्तवर बुद्धासने निसीदति, भिक्खूनं भत्तकिच्चपरियोसानानं आगमयमनो। ततो भिक्खूनं भत्तकिच्चपरियोसाने उपट्ठाको भगवतो निवेदेति। अथ भगवा गन्धकुटिं पविसति। इदं ताव पुरेभत्तकिच्चं.

२. अथ भगवा एवं कतपुरेभत्तकिच्चो गन्धकुटिया उपट्ठाने निसीदित्वा पादे पक्खालेत्वा पादपीठे ठत्वा भिक्खूनं ओवदति. "भिक्खवे ! अप्पमादेन सम्पादेथ. दुल्लभो बुद्धुप्पादो लोकस्मिं, दुल्लभो मनुस्सत्त पाटिलाभो, दुल्लभा खणसम्पत्ति, दुल्लभा पब्बज्जा, दुल्लभं सद्धम्मसवन न्ति" तत्थ केचि भगवन्तं कम्मट्ठानं पुच्छन्ति भगवा तेसं चरियानुरूपं कम्मट्ठानं देति. ततो सब्बेपि भगवन्तं वन्दित्वा अत्तनो अत्तनो रत्तिट्ठान दिवाट्ठानानि गच्छन्ति. केचि अरञ्ञं, केचि रुक्खमूलं, केचि पब्बतादीनं अञ्ञतरं, केचि चातुम्महाराजिक भवनं, केचि वसवत्तिभवन न्ति. ततो भगवा गन्धकुटिं पविसित्वा सचे आकंखति दक्खिणेन पस्सेन सतो सम्पजानो मुहुत्तं सीहसेय्यं कप्पेति. अथ समस्सासितकायो उट्ठहित्वा द्वितीयभागे लोकं ओलोकेति. ततिय भागे यं गामं वा निगमं वा उपनिस्साय विहरति तत्थ जनो पुरेभत्तं दानं दत्वा पच्छाभत्तो सुनिवत्थो सुपारुतो गन्ध पुप्फादीनि आदाय विहारे सन्निपतति. ततो भगवा सम्पत्त परिसाय अनुरूपेन पाटिहारियेन गन्त्वा धम्म सभायं पञ्ञत्तवर बुद्धासने निसज्ज धम्मं देसेति, कालयुत्तं समय युत्तं। अथ कालं विदित्वा परिसं उय्योजेति. मनुस्सा भगवन्तं वन्दित्वा पक्कमन्ति. इदं पच्छाभत्त किच्चं.

३. सो एवं निट्ठितपच्छाभत्तकिच्चो सचे गत्तानि ओसिञ्चितुकामो होति बुद्धासना उट्ठाय नहानकोट्ठकं पविसित्वा उपट्ठाकेन पटियादित उदकेन गत्तानि उतुं गाहापेति. उपट्ठाकोपि बुद्धासनं आनेत्वा गन्ध कुटिपरिवेणे पञ्ञापेति. भगवा रत्तदुपट्टं निवासेत्वा कायबन्धनं बन्धित्वा उत्तरासङ्गं एकंसं कत्वा तत्थ आगन्त्वा निसीदति एकको व मुहुत्तं पटिसल्लीनो. अथ भिक्खू ततो ततो आगम्म भगवतो उपट्ठानं गच्छन्ति. तत्थ एकच्चे पञ्हं पुच्छन्ति, एकच्चे कम्मट्ठानं, एकच्च धम्मसवनं याचन्ति. भगवा तेसं अधिप्पायं सम्पादेन्तो पुरिमयामं वीतिनामेति. इदं पुरिमयाम किच्चं.

४. पुरिमयामकिच्च परियोसाने पन भिक्खुसु भगवन्तं वन्दित्वा पक्कन्तेसु सकलदससहस्सी लोकधातु देवतायो ओकासं लभमाना भगवन्तं उपसङ्कमित्वा पञ्हं पुच्छन्ति यथाभिसंखतं अन्तमसो चतुरक्खरम्पि भगवा तासं देवतानं पञ्हं विस्सज्जेन्तो मज्झिमयामं वीतिनामेति. इदं मज्झिमयाम किच्चं.

५. पच्छिमयामं पन तयो कोट्ठासे कत्वा पुरेभत्ततो पट्ठाय निसज्जापीळितस्स सरीरस्स किलासुभावमोचनत्थं एकं कोट्ठासं चङ्कमेन वीतिनामेति.

ii दुतिय कोट्ठासे गन्धकुटिं पविसित्वा दक्खिणेन पस्सेन सतो सम्पजानो सीहसेय्यं कप्पेति.

iii ततिय कोट्ठासे पच्चुट्ठाय निसीदित्वा पुरिमबुद्धानं सन्तिके दानसीलादिवसेन कताधिकारपुग्गल दस्सनत्थं बुद्धचक्खुना लोकं आलोकेति इदं पच्छिमयाम किच्चं.

———:o:———